04 - योगी की संघ और संगठन से दूरी के परिणाम

05 - छठ पूजा-संस्कृति से विज्ञान तक

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 25 अक्टूबर, 2025

06 - राज्य स्तरीय कला उत्सव में प्रदेश के लोक...

07 - राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 55, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

तेजस्वी महागठबंधन के सीएम फेस बने, एनडीए कब घोषित करेगा?

समी अहमद

बिहार चुनाव में महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को आधिकारिक रूप से मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित कर दिया है। अब राजनीतिक निगाहें एनडीए पर हैं- क्या भाजपा-जेडीयू गठबंधन भी अपना चेहरा घोषित करेगा? एनडीए में मुख्यमंत्री का चेहरा बहस का मुद्दा बनेगा और इस बात को लेकर भारतीय जनता पार्टी और जेडीयू में अंदरूनी तनाव भी पैदा कर सकता है। गृहमंत्री अमित शाह ने हाल ही में नीतीश कुमार के सीएम फेस पर पूछे गए एक सवाल पर कहा था कि 'मैं मुख्यमंत्री नहीं बनाता। मुख्यमंत्री बनाने का काम विधायकों का है। हम नीतीश कुमार के चेहरे पर चुनाव लड़ रहे हैं।' अमित शाह के बयान के बाद और सवाल उठने लगे कि आखिर एनडीए नीतीश को सीएम चेहरा घोषित करने से बच क्यों रहा है?

तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाने के लिए आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस की खास बात यह रही कि उसके लिए लगाए गए बैनर में केवल तेजस्वी यादव की तस्वीर थी। भारतीय जनता पार्टी और जदयू के नेताओं ने यह जरूर सवाल खड़ा किया कि उस बैनर पर राहुल गांधी की तस्वीर या किसी और नेता की तस्वीर क्यों नहीं थी लेकिन शायद महागठबंधन की ओर से इस तस्वीर से यह संदेश दिया गया कि उनके पास तेजस्वी यादव के अलावा मुख्यमंत्री का चेहरा कोई और नहीं है और इस मुद्दे पर घटक दल एकमत हैं। दिलचस्प बात यह है कि उस बैनर में सभी घटक दलों के चुनाव चिह्न ज़रूर मौजूद थे।

यानी यह कहा जा सकता है कि तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री के चेहरा के रूप में पेश करने के मामले में महागठबंधन ने बेहद आक्रामक रुख अपनाया है। पहले यह बात कही जा रही थी कि शायद किसी रणनीति के तहत कांग्रेस पार्टी तेजस्वी यादव के चेहरे को सामने लाना नहीं चाहती लेकिन अब यह बात सही है कि आर या पार तेजस्वी यादव के चेहरे पर ही होगा।

इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुकेश सहनी को उपमुख्यमंत्री के चेहरे के तौर पर पेश किया गया और एक और संभावित उपमुख्यमंत्री के होने की भी चर्चा की गई। इस घोषणा से यह तय पाया कि मुकेश सहनी हालांकि अपनी मर्जी के मुताबिक सीट संख्या नहीं पा सके लेकिन अपने नाम को बतौर उपमुख्यमंत्री पेश करने की मांग पर मुहर लगवा ली।

मुकेश सहनी 2020 के विधानसभा चुनाव के दौरान ऐसी ही एक प्रेस कॉन्फ्रेंस से उठकर चले गए थे और बाद में भाजपा के साथ समझौता कर एनडीए में शामिल हो गए थे।

पिछले चुनाव में हालांकि मुकेश सहनी खुद अपना चुनाव हार गए थे लेकिन उनकी पार्टी से जो उम्मीदवार जीते भी। उन्होंने मुकेश सहनी का साथ छोड़कर भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली थी। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि क्योंकि इस बार उनका नाम डिप्टी सीएम के तौर पर लिया जा चुका है इसलिए हो सकता है कि उनकी जाति का समर्थन इस बार उनके लिए और उनकी पार्टी वीआईपी के उम्मीदवारों के लिए काफी हद तक बढ़े।

इस प्रेस कांफ्रेंस के पहले यह कहा जा रहा था कि राजद अकेले घोषणाएं कर रहा है और महागठबंधन की ओर से कोई साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं हुई है। इस बात को इस दलील के तौर पर भी पेश किया जा रहा था कि महागठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं है और जिस तरह कुछ जगहों पर फ्रेंडली फाइट होने की बात की जा रही है उससे उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं होगा।

इससे पहले राजद की ओर से ही दो बड़ी घोषणाएँ की गईं जिनमें हर घर के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की बात कही गई थी और बुधवार को तेजस्वी यादव ने एक बार फिर एक बड़ी घोषणा करते हुए जीविका समूह के लिए एक बड़ा ऐलान किया। ऐसा माना जा रहा है कि अगर महागठबंधन की सरकार बनती है तो इसमें इन दो घोषणाओं का बड़ा रोल रहेगा लेकिन चूँकि वह घोषणा संयुक्त रूप से नहीं की गई थी तो बहुत से लोग यह सवाल उठा रहे थे कि क्या इन दो वादों पर महागठबंधन में आपसी खींचतान है।

कांग्रेस और राजद के बीच जो तनातनी चल रही थी उसमें बर्फ पिघलाने का काम शायद अशोक गहलोत की उस मुलाक़ात ने किया जो राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव के साथ पटना में हुई। उसके बाद बुधवार शाम तक यह पता चल गया कि महागठबंधन की एक साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। इससे मोटे तौर पर यह बात भी समझ में आई कि अब इनका झगड़ा कुछ हद तक सुलझ गया है और यह एक स्वर में आकर बात करने के स्थिति में आ चुके हैं।

राजद, कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टियों और वीआईपी वाले गठबंधन को महागठबंधन कहा जाए या इसे इंडिया ब्लॉक माना जाए इस बात पर भी रोचक बहस चलती रही है। दरअसल, महागठबंधन शब्द का प्रयोग 2015 में तब हुआ था जब राजद, कांग्रेस और वामपंथी दलों के गठबंधन के साथ नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू भी शामिल हो गई थी। उसके बाद से लगातार महागठबंधन शब्द का ही इस्तेमाल हो रहा था लेकिन फिर राष्ट्रीय स्तर पर जब इंडिया ब्लॉक बना तो उसकी चर्चा ज्यादा होने लगी। बिहार में महागठबंधन का शब्द पहले से इस्तेमाल में था इसलिए अब भी ज्यादा चर्चा उसी की होती है।

महागठबंधन और इंडिया ब्लॉक के इस शाब्दिक अंतर को छोड़कर देखा जाए तो इस बार इस गठबंधन में शामिल दलों के बीच भी शुरुआत में काफी उलझनें देखी गई थीं। सीट शेयरिंग फ़ॉर्मूले को लेकर एनडीए में भी घमासान मचा था लेकिन उसने किसी न किसी तरह सीटों के बंटवारे का ऐलान कर दिया था। इसके बाद जीतन राम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा की तरफ से दुख प्रकट किया गया और यह भी हुआ कि नीतीश कुमार की पार्टी और चिराग पासवान की पार्टी के बीच कौन किस सीट पर लड़ेगा, इस पर भी विवाद हुआ। दूसरी तरफ़ महागठबंधन में इस बात को लेकर बहुत उलझन रही और अब तक कुछ सीटों पर फ्रेंडली फाइट की बात की जाती रही।

कांग्रेस पार्टी ने हालाँकि इसके बचाव में यह कहा कि कुछ ही सीटों पर ऐसा मामला है और फ्रेंडली फाइट होती रहती है लेकिन विपक्ष का कहना है कि जब फ्रेंड है तो फाइट कैसी और फाइट है तो फ्रेंड कैसे। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि गठबंधन की राजनीति में कुछ सीटों पर ऐसा होना कोई नई बात नहीं है। यह भी कहा गया कि फ्रेंडली फाइट भले ही कुछ जगहों पर हो, लेकिन इसका असर पूरे राज्य पर पड़ सकता है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

● बिहार में पीएम मोदी ने दिन में जलवाई मोबाइल लाइट

लोगों से पूछा-इतनी रोशनी में लालटेन की जरूरत है क्या

● पीएम के मंच पर नहीं थी लाइट, शारदा सिन्हा को किया याद

समस्तीपुर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को बेगूसराय और समस्तीपुर में एनडीए कैंडीडेट्स के पक्ष में चुनावी सभाएं कीं। इस दौरान उन्होंने दोनों ही जगह सभा में मौजूद लोगों से मोबाइल की फ्लैश लाइट जलवाई। उन्होंने पूछा इतनी रोशनी में भी क्या आपको लालटेन की जरूरत है। पीएम ने कहा, कांग्रेस के शासन में मोबाइल बहुत महंगा था। विदेश से मंगवाना पड़ता था। उस वक्त मोबाइल फोन बनाने वाली सिर्फ 2 फैक्ट्री थी, अब 200 से ज्यादा फैक्ट्रियां हैं। एनडीए सरकार में डेटा भी सस्ता है।

● महागठबंधन में अटक,लटक, झटक, पटक दल-प्रधानमंत्री ने कहा, जब से चुनाव की घोषणा हुई है, हम सब देख रहे हैं। एक तरफ एनडीए है, जहां चिराग जी, कुशवाहा जी, नीतिश जी जैसे समझदार नेता हैं। वहीं दूसरी तरफ लाठियां भांज रहा महालठबंधन है। इस महालठबंधन में अटक,लटक, झटक, पटक दल है। राजद बीते 2 दशक में कोई चुनाव नहीं जीती, लेकिन अपनी अंहकार में अटकी है। इसी अंधकार में जेएमएम को झटक दिया। कांग्रेस 35 साल से बिहार में राजद की पिछलग्गू बनी हुई है।

नई रफ्तार से चलेगा बिहार फिर आएगी एनडीए सरकार

पीएम ने मंच से नारा दिया- नई रफ्तार से चलेगा बिहार, फिर आएगी एनडीए सरकार। प्रधानमंत्री ने कहा, पूरा बिहार कह रहा है फिर एक बार एनडीए सरकार, फिर एक बार सुशासन सरकार। जंगलराज वालों को दूर रखेगा बिहार। पीएम ने कहा, आपका उत्साह देखकर मैं कह सकता हूं नीतिश बाबू के नेतृत्व में एनडीए जीत के सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ सकता है। इस बार बिहार अबतक का सबसे बड़ा जनादेश देगा। प्रधानमंत्री ने कहा, 2005 में अक्टूबर का महीना ही था जब बिहार ने जंगलराज से मुक्ति पाई थी। नीतिश जी के नेतृत्व में एनडीए का सुशासन शुरू हुआ था। लेकिन उस समय केंद्र में कांग्रेस-राजद की सरकार थी। बिहार की परेशानी बढ़ाने में उन्होंने कोई कभी नहीं छोड़ी थी। राजद वाले आपसे बदला ले रहे थे कि आपने नीतिश कुमार की सरकार क्यों बनाई। राजद वाले कांग्रेस को धमकाते थे कि अगर आपने नीतिश जी की बात मानी, कोई प्रोजेक्ट दिया तो हम गठबंधन तोड़ देंगे।

● आंध्रप्रदेश के कुरनूल में भीषण सड़क हादसा

20 यात्री जिंदा जले

कुरनूल (एजेंसी)। हैदराबाद-बेंगलुरु हाईवे पर शुक्रवार को हुई एक दुखद बस दुर्घटना ने लोगों को झकझोर कर रख दिया है। हादसे में कम से कम 20 लोग मारे गए और कई घायल हुए हैं।

● तीन यात्रियों के फोन अब तक बंद

● बाइक टकराकर फ्यूल टैंक में फंसी, जिससे आग लगी

यह घटना कुरनूल जिले के चिन्नातेकुर के पास हुई, जब एक वोल्वो बस दोपहिया वाहन से टकरा गई और दुर्घटना के तुरंत बाद आग पकड़ने के कारण पूरी तरह जल गई। बस हैदराबाद से बेंगलुरु जा रही थी और इसके अंदर लगभग 40 लोग सवार थे। इस दुर्घटना में अब तक बाइक सवार के अलावा 19 शव बरामद किए जा चुके हैं। कुछ अन्य लोगों के बारे में अभी जानकारी नहीं मिल पाई है। हालांकि, माना जा रहा है कि हैदराबाद में बस में सवार

तीन लोगों के फोन बंद हो रहे हैं। उनके साथ क्या हुआ। इसे लेकर चिंता है। कुरनूल बस दुर्घटना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गहरा दुख व्यक्त किया है। हाल ही में घटनास्थल पर पहुंची फोरेंसिक टीमों ने जली हुई बस से 19 शव बरामद किए हैं।

सुप्रभात

दोस्ती में दोस्त मेरी खामियां गिनने लगा
डालियों का नाम लेकर पत्तियां गिनने लगा
ख़ामुशी बढ़ने लगी तो जाने क्या सूझी मुझे
गोद में सर रखके उसकी चूड़ियां गिनने लगा
ज़िन्दगी के जुल्म मुझको तब कहीं आए नज़र
बाप के चेहरे की मैं जब झुर्रियां गिनने लगा
धीरे- धीरे लोग मुझको छोड़ कर जाने लगे
और मैं जाते हुओं की गिनतियां गिनने लगा
तैश में आया तो उसने कर दिया सब कुछ फ़ना
होश में आया तो उजड़ी बस्तियां गिनने लगा
गिड़गिड़ाते पाँव पड़ते उसके कदमों से उठा
और अपने ख्वाब की मैं धज्जियां गिनने लगा।

- सादिक अली शाकिब

बिहार चुनाव में सीएम मोहन यादव बोले- राहुल गांधी को डूब मरना चाहिए

कांग्रेसी सांसद सेना के पराक्रम पर सबूत मांगते हैं; पीएम ने देश का मान बढ़ाया

भोपाल/बेतिया। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष ताबड़तोड़ प्रचार कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव शुक्रवार को पश्चिम चंपारण शेरा बाजार खेल मैदान में जनसभा को संबोधित किया। उनका केंद्रीय मंत्री सतीश चंद्र दुबे समेत अन्य मंचासीन नेताओं ने स्वागत किया।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि, राहुल गांधी और कांग्रेस को डूब मरना चाहिए। विदेश में जाकर देश का अपमान करते हैं और सेना के पराक्रम पर सबूत मांगते हैं। प्रधानमंत्री के जरिए भाजपा ने राष्ट्रपति मुर्मू को देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचाया। महादलित आयोग भाजपा ने बनाया। ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा पीएम मोदी ने दिया।

कांग्रेस-राजद वादे करने वाली पार्टियां

ऐसे नेता को जिताइए जो देश की सुरक्षा और सम्मान के लिए हमेशा खड़ा रहता है। कांग्रेस और राजद जैसी पार्टियां सिर्फ वादे करती हैं, जबकि भाजपा जनता के विश्वास और राष्ट्रहित के लिए काम करती है।

नीतीश कुमार के नेतृत्व में बनेगी सरकार

इधर, केंद्रीय मंत्री सतीश चंद्र दुबे ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में फिर से सरकार बनेगी। 2005 से पहले बच्चे-बच्चियां स्कूल नहीं जाते थे। नीतीश कुमार के आने के बाद शिक्षा- व्यस्था में सुधार हुआ। आज मुख्यमंत्री साइकिल योजना से बच्चे ट्रिन-ट्रिन करते पढ़ने जाते हैं। लोगों को सड़क और बिजली मिली।

हर दिशा से अलग-अलग रंग में दिखते हैं शिव के 5 रूप

रुद्रप्रयाग (एजेंसी)। रुद्रप्रयाग में स्थित केदारनाथ धाम के कपाट बंद होने के बाद बाबा केदार की पंचमुखी चल उत्सव डोली रामपुर पहुंच गई है। यहां भक्तों ने हर-हर महादेव के जयकारों के बीच बाबा केदार का स्वागत किया। गुरुवार को सुबह साढ़े 8 बजे मंदिर के कपाट शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए थे। इसके बाद शिव के 5 स्वरूपों को दिखाने वाली बाबा की पंचमुखी डोली 26 किमी की कठिन पैदल यात्रा के बाद शाम 4 बजे रामपुर पहुंची, जहां भक्तों ने बाबा के लिए पारंपरिक भोजन तैयार किया। यहीं बाबा की डोली का रात्रि विश्राम हुआ। इस डोली में दिखने वाले शिव के पांच स्वरूप भक्तों को अलग अलग रंग में नजर आते हैं। बाद में डोली गुप्तकाशी के विश्वनाथ मंदिर पहुंची और 25 अक्टूबर को डोली अपने अंतिम पड़ाव उखीमठ स्थित ओंकारेश्वर मंदिर में पहुंचेगी। बाबा यहां 6 महीने की शीतकालीन गद्दी पर विराजमान होंगे। भगवान केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव मूर्ति शिव के पांच स्वरूपों- ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव और सद्योजात का प्रतीक है। ये पांच रूप मानव जीवन की पांच क्रियाओं-क्रीड़ा, तपस्या, लोकसंहार, अहंकार और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं। वरिष्ठ तीर्थपुरोहित उमेश चंद्र पोस्ती कहते हैं, पंचमुखी मूर्ति भगवान शिव की सृष्टि से लेकर संहार तक की शक्ति को दर्शाती है। भूतल में सृष्टि, जल में स्थिति, अग्नि में संहार, वायु में तिरोभाव और आकाश में अनुग्रह ये पांचों भाव शिव के स्वरूप में समाहित हैं। पंचमुखी मूर्ति में भगवान शिव के पांच दिशाओं में अलग-अलग वर्ण दिखाई देते हैं। सिर की दिशा श्वेत वर्ण में, पूर्व दिशा सुवर्ण में, दक्षिण दिशा नीलवर्ण में, पश्चिम दिशा शुभ स्फटिक उज्ज्वल में और उत्तर दिशा जपापुष्प या प्रवाल स्वरूप में है। ये पांचों रंग संसार के सभी वर्णों और भावों के प्रतीक हैं।

● 'ओम नमः शिवाय' से जुड़ा केदारनाथ की डोली का रहस्य

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

उमा भारती खत्म करेंगी राजनीतिक एकांतवास!

● पर रख दी है झांसी वाली शर्त, यूपी में चर्चे शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा की दिग्गज नेत्री और मध्य प्रदेश की पूर्व सीएम उमा भारती क्या अपना राजनीतिक एकांतवास खत्म करने वाली हैं। इसकी चर्चा भाजपा में जोरों पर है क्योंकि उन्होंने खुद कहा है कि वह 2029 का लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं। उनका कहना है कि झांसी मेरी है और मैं यहीं से लोकसभा का चुनाव लड़ना चाहती हूं। उमा

भारती ने खुद ही राजनीति से दूरी बना ली थी और अन्य चीजों को प्राथमिकता बताया था। लेकिन अब खुद ही वह अपना राजनीतिक एकांत खत्म करती दिख रही हैं। उनके बयान से यूपी में चर्चा भी है और फिलहाल झांसी और उसके आसपास के इलाके में हलचल तेज है। वह पहले भी झांसी, महोबा जैसे इलाकों में सक्रिय रही हैं। उमा भारती लोधी समाज से आती हैं और इस बिरादरी की झांसी एवं उसके आसपास के इलाकों में काफी अच्छी है। पश्चिम यूपी, पूर्वी यूपी से लेकर बुंदेलखंड तक में लोधी समाज की अच्छी खासी आबादी है। कल्याण सिंह इस वर्ग के नेता हुआ करते थे।

पहले विदेश मंत्री को भेजा, अब खुद आने की तैयारी!

● बहुत जल्द भारत दौरा कर सकते हैं कनाडाई पीएम कार्नी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और कनाडा के संबंधों में आई गर्मजोशी के बीच कनाडाई प्रधानमंत्री मार्क कार्नी फरवरी 2026 में भारत का दौरा कर सकते हैं। माना जा रहा है कि यह यात्रा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) एक्शन समिट में भाग लेने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ताओं के लिए होगी। भारतीय उच्चायुक्त दिनेश कुमार

पाटनायक ने कनाडा के प्रमुख अखबार द ग्लोब एंड मेल को दिए इंटरव्यू में इसकी पुष्टि की है, जो दोनों देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक साझेदारी को नई गति देने का संकेत देता है। जस्टिन ट्रूडो के कार्यकाल के दौरान तनावग्रस्त रहे भारत-कनाडा संबंध मार्च 2025 में मार्क कार्नी के प्रधानमंत्री बनने के बाद धीरे-धीरे सामान्य हो रहे हैं। जून 2025 में कनाडा के कैनानास्किस में दोनों नेता मिले थे।

'अबकी बार मोदी सरकार' लिखने वाले पीयूष पांडे नहीं रहे

● हमारा बजाज, कुछ खास है जिंदगी में और दो बूंदें जिंदगी की से मशहूर हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। एड गुरु पद्मश्री पीयूष पांडे का गुरुवार को निधन हो गया। जानकारी आज सामने आई है। 70 साल की उम्र में मुंबई में उन्होंने अंतिम सांस ली। पीयूष ने अबकी बार मोदी सरकार नारा लिखा था। इसके अलावा, मिले सुर मेरा तुम्हारा गाना लिखा था। पीयूष पांडे की मौत के कारणों का पता नहीं चल पाया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक वे शरीर में संक्रमण से जूझ रहे थे। अंतिम संस्कार मुंबई में किया गया। पीएम नरेंद्र मोदी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। पीएम ने एक्स पर लिखा, पीयूष पांडे क्रिएटिविटी के लिए जाने जाते थे।

एडवर्टाइजिंग की दुनिया में उन्होंने शानदार योगदान दिया। मैं उनके साथ हुई बातचीत को सालों तक संजोकर रखूंगा। उनके दुनिया से जाने से बहुत दुखी हूं। उनके परिजन के साथ मेरी संवेदनाएं हैं। पीयूष 27 साल की उम्र में विज्ञापन जगत से जुड़ गए थे। उन्होंने शुरुआत अपने भाई प्रसून पांडे के साथ की। दोनों ने रेडियो जिंगल्स की आवाज दी थी।

भारतीय नौसेना को मिला ताकतवर युद्धपोत 'माहे'

● दुश्मन की पनडुब्बियों को कर देगा खत्म, बेहद है खास

कोच्चि (एजेंसी)। भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) ने भारतीय नौसेना को 'माहे' नामक पहला स्वदेशी एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट (एएसडब्ल्यू एसडब्ल्यूसी) सौंप दिया है। यह युद्धपोत आठ ऐसे जहाजों की सीरीज का पहला जहाज है, जो पूरी तरह से स्वदेशी डिजाइन और निर्माण पर आधारित है। इस डिलीवरी ने नौसेना की तटीय जलक्षेत्रों में पनडुब्बी-रोधी क्षमताओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिलीवरी समारोह बुधवार को कोच्चि में आयोजित किया गया। स्वीकृति दस्तावेज पर सीएसएल के निदेशक (ऑपरेशंस) डॉ. एस. हरिकृष्णन और माहे के कमांडिंग ऑफीसर (डिजाइनेट) कमांडर अमित चंद्रा चौबे ने हस्ताक्षर किए। समारोह में वेस्टर्न नेवल कमांड के चीफ स्टाफ ऑफीसर (टेक्निकल) रियर एडमिरल आर. अधिश्रीनिवासन, कोच्चि के वारशिप प्रोडक्शन सुपरिंटेंडेंट कमोडोर अनुप मेनन सहित नौसेना और शिपयार्ड के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। सीएसएल के एक प्रवक्ता ने बताया कि यह जहाज डेट नोर्स्के वेरिटास

(डीएनवी) के वर्गीकरण नियमों के अनुसार डिजाइन और निर्मित किया गया है। यह नौसेना का सबसे बड़ा युद्धपोत है जो डीजल इंजन और वाटरजेट प्रोपल्शन सिस्टम से संचालित होता है, जो उथले जल में गति, चपलता और परिचालन लचीलापन प्रदान करता है। आईएनएस माहे की लंबाई 78 मीटर है और यह उथले जलक्षेत्रों में एंटी-सबमरीन ऑपरेशंस, माइन-लेइंग, खोज एवं बचाव कार्यों तथा कम तीव्रता वाले समुद्री अभियानों के लिए डिजाइन किया गया है। जहाज में आधुनिक सेंसर, एडवांस संचार प्रणालियां और कम साउंड सिग्नेचर वाली तकनीकें लगाई गई हैं, जो पनडुब्बी शिकार में प्रभावी साबित होंगी। इससे नौसेना की तटीय सुरक्षा और एंटी-सबमरीन वारफेयर क्षमताएं काफी मजबूत होंगी। सरकारी आत्मनिर्भर भारत अभियान के अनुरूप, इस युद्धपोत में 90 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है। अधिकांश सामग्री, मशीनरी, सेंसर और ऑनबोर्ड सिस्टम भारतीय निर्माताओं से प्राप्त किए गए हैं, जो देश की रक्षा औद्योगिक क्षमता की परिपक्वता को दर्शाता है। सीएसएल के प्रवक्ता ने कहा, माहे की डिलीवरी भारतीय नौसेना के स्वदेशीकरण प्रयासों में एक और मील का पत्थर है।

14 से 17 नवंबर तक ईटखेड़ी में होगा विश्वस्तरीय इज्तिमा का आयोजन

300 एकड़ पार्किंग, 70 पार्किंग जोन, 30 हजार से अधिक वालेंटियर्स करेंगे काम

12 लाख जायरीन के लिए 120 एकड़ का पंडाल

भोपाल (नप्र)। भोपाल का 78वां आलमी तब्लीगी इज्तिमा इस बार और भी भव्य और संगठित रूप में आयोजित होने जा रहा है। 14 से 17 नवंबर तक ईटखेड़ी में होने वाले इस विश्वस्तरीय आयोजन में करीब 12 लाख से अधिक जायरीन के आने की उम्मीद है। इज्तिमा कमेटी ने पिछले वर्ष की तुलना में सभी व्यवस्थाओं में 20 प्रतिशत का इज़ाफ़ा किया है, चाहे वह पंडाल, खानपान, सर्विस एरिया या पार्किंग का विस्तार हो।

30 हजार प्रशिक्षित लोग संभालेंगे व्यवस्थाएं- पूरे आयोजन की व्यवस्था 30 हजार प्रशिक्षित और अनुभवी लोगों के हाथों में है। इनमें 25 हजार वॉलंटियर्स इज्तिमा कमेटी के हैं और 5 हजार का अमला नगर निगम, प्रशासन और पुलिस बल से जुड़ा है। ये सभी क्राउड मैनेजमेंट, सफाई, सुरक्षा और पंडाल व्यवस्था में अहम भूमिका निभा रहे हैं। भीड़ बढ़ते ही टीम नए टेंट लगाने का काम तुरंत शुरू कर देती है। सफाईकर्मी बोरा लेकर चलते हैं ताकि कहीं भी कचरा इकट्ठा न हो।

20 प्रतिशत बढ़े इंतजाम

कमेटी ने इस बार की तैयारियों में हर स्तर पर 20 प्रतिशत की वृद्धि की है। लाइटिंग, साउंड, पानी और खानपान व्यवस्था को और मज़बूत किया गया है। सर्विस एरिया में अतिरिक्त ट्यूबवेल और जल टैंकर लगाए जा रहे हैं। फूड ज़ोन का आकार भी बढ़ाया गया है ताकि जायरीन को कतार में ज़्यादा देर न लगानी पड़े।

सुरक्षा और सुविधा- प्रशासन की संयुक्त निगरानी

इज्तिमा स्थल पर इस बार फायर सेफ्टी, मेडिकल यूनिट और ट्रैफिक कंट्रोल के लिए प्रशासन और कमेटी की संयुक्त टीम तैनात रहेगी। एंट्री और एग्ज़िट पॉइंट्स को पुनः डिजाइन किया गया है ताकि आवागमन सुगम रहे। सुरक्षा कारणों से पंडाल की क्षमता 1.80 लाख से घटाकर 1.40 लाख रखी गई है।

इज्तिमा 5 बड़े इस्लामिक आयोजनों में एक

भोपाल का आलमी तब्लीगी इज्तिमा दुनिया के 5 सबसे बड़े इस्लामिक आयोजनों में से एक माना जाता है। दुनियाभर से इसमें लाखों लोग शामिल होते हैं। दुनिया में केवल 3 देश भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में इसका आयोजन होता है।

120 एकड़ में पंडाल, 300 एकड़ में पार्किंग एरिया

कमेटी के मीडिया कोऑर्डिनेटर डॉक्टर उमर हफीज इस बार पंडाल का क्षेत्रफल 100 एकड़ से बढ़ाकर 120 एकड़ कर दिया गया है। वहीं जायरीन की आमद को देखते हुए पार्किंग एरिया को 300 एकड़ से अधिक तक फैला दिया गया है। कुल 70 पार्किंग जोन बनाए जा रहे हैं ताकि ट्रैफिक मैनेजमेंट में कोई दिक्कत न हो। कमेटी प्रभारी डॉ. उमर हफीज के अनुसार, हमारा लक्ष्य 23 अक्टूबर तक 50 प्रतिशत कार्य पूरा करने का है, उसके बाद समीक्षा बैठक में हर सेक्शन की जांच होगी।

सुरक्षा परिषद का एक सदस्य आतंकी संगठनों का हितैषी

जयशंकर ने पहलगाम अटैक का जिक्र कर यूएन की विश्वसनीयता पर उठाए सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र की आतंकवाद के प्रति प्रतिक्रिया पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि जब सुरक्षा परिषद का एक सदस्य खुलेआम उस संगठन की रक्षा करता है जो पहलगाम जैसे बर्बर आतंकी हमलों की जिम्मेदारी लेता है, तो इससे बहुपक्षवाद की विश्वसनीयता पर गहरा असर पड़ता है। उन्होंने यह भी कहा कि आतंकवाद के पीड़ितों और अपराधियों को एक ही श्रेणी में रखना दुनिया को और अधिक निंदनीय बना देता है। जब खुद को आतंकवादी कहने वालों को प्रतिबंधों से बचाया जाता है, तो इसमें शामिल लोगों की ईमानदारी पर सवाल उठता है। जयशंकर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए आतंकवाद के प्रति उसकी प्रतिक्रिया एक बड़ा उदाहरण है। उन्होंने चिंता जताई कि सुरक्षा परिषद का एक स्थायी

सदस्य खुले तौर पर उन संगठनों का बचाव करता है जो पहलगाम जैसे भयानक आतंकवादी हमलों की जिम्मेदारी लेते हैं। यह बहुपक्षवाद की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाता है।

उत्तराखंड में सफर महंगा, बाहरी वाहनों पर लगेगा ग्रीन टैक्स

● 24 घंटे के लिए होगा मान्य, 150 करोड़ की कमाई करेगी सरकार

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में सफर करना अब महंगा होने वाला है। राज्य सरकार बाहर से आने वाली गाड़ियों से ग्रीन टैक्स वसूल करने की तैयारी में है। अब तक यह शुल्क सिर्फ कॉमर्शियल गाड़ियों पर लागू था, लेकिन जल्द ही सरकार निजी कार, जीप और अन्य चार पहिया गाड़ी को इसके दायरे में लाने वाली है। इससे सरकार को सालाना 150 करोड़ रुपए आय होने की उम्मीद है। इस पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी और आधुनिक बनाने के लिए परिवहन विभाग ने एक निजी कंपनी से करार किया है, जो राज्य की सीमाओं पर लगे 15 ऑटोमेटेड नंबर प्लेट रिकग्निशन कैमरों के जरिए बाहर से आने वाले गाड़ियों की पहचान करेंगी। ग्रीन टैक्स एक ऐसा कर है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों पर लगाया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के लिए प्रोत्साहित करना है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री को लिखा खुला पत्र

जीतू ने कहा-वित्तीय अराजकता में फंसी है मोहन सरकार, मंडी टैक्स बढ़ाने का प्रस्ताव किसान विरोधी

भोपाल (नप्र)। भाईदूज पर लाड़ली बहनों को मुख्यमंत्री निवास बुलाने और फिर भी 250 रुपए की किश्त न देने को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उनकी सरकार पर तीखा प्रहार किया है। पटवारी ने मुख्यमंत्री को खुला पत्र लिखा है। जिसमें कहा है कि लाड़ली बहन योजना को लेकर आपकी सरकार का दोहरापन फिर सामने आ चुका है।

पटवारी ने लिखा कि आपने भाईदूज पर लाड़ली बहनों के खाते में 250 रुपए भेजने की घोषणा की थी। प्रदेशभर से महिलाओं को राजधानी बुलाया भी, लेकिन वित्त विभाग की मंजूरी नहीं मिलने और बजट संकट के चलते बहनों के खाते खाली रह गए। क्या यही मध्य प्रदेश में 'आत्मनिर्भर महिला' बनाने का 'सरकारी-संकल्प' है? क्या अब भाजपा सरकार दिवाली और भाई दूज जैसे पर्व पर भी केवल भाषणों

से ही 'समृद्धि' के सपने दिखाएगी! क्या आप भी पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की तरह 'रजिस्टर्ड-झूठ' बोलने का नया रिकॉर्ड बनाएंगे?

राज्य में वित्तीय अराजकता की स्थिति- पटवारी ने कहा कि हर माह 5 से 5.5 हजार करोड़ रुपए कर्ज लेने वाली सरकार अब भावांतर भुगतान योजना का पैसा न दे पाने की स्थिति में किसानों से 1 प्रतिशत मंडी शुल्क बढ़ाकर वसूली करने जा रही है। मुख्यमंत्री को स्वीकार करना चाहिए कि राज्य में वित्तीय अराजकता की स्थिति बन चुकी है। उन्होंने कहा-मध्य प्रदेश की जनता को आप पर विश्वास था कि 'डॉ.' उपाधि के साथ सत्ता में आने वाला व्यक्ति संवेदनशीलता और सत्यनिष्ठा से शासन करेगा, लेकिन किसानों और महिलाओं के प्रति आपकी सरकार का रवैया उस विश्वास को पूरी तरह तोड़ चुका है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने आगे कहा कि मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, सरकार ने भावांतर भुगतान योजना के लिए मंडी बोर्ड से 1500 करोड़ रुपए की मांग की है, लेकिन कृषि मंत्री एंदल सिंह कंसाना ने साफ कहा है कि मंडी बोर्ड के पास इतनी आय नहीं है।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत पर टीटीपी का कब्जा!

● घुसने से भी डर रही जिहादी मुनीर की पंजाबी सेना, डूरंड लाइन खत्म

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तानी सेना और टीटीपी आतंकियों के लिए अफगानिस्तान से सटा खैबर पख्तूनख्वा प्रांत जंग का मैदान बन गया है। पाकिस्तानी सेना बहुत तेजी से खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के कई जिलों से अपनी पकड़ खोती जा रही है। इस इलाके पर अब तहरीक-ए-तालिबान यानि टीटीपी और उसके सहयोगी गुटों के आतंकियों ने अपनी पकड़ काफी मजबूत कर लिया है। खुफिया सूत्रों का कहना है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच मौजूद सीमा रेखा डूरंड लाइन खासकर खैबर, कुर्रम, उत्तरी और दक्षिणी वजीरिस्तान तथा बाजौर तक जाने से भी पाकिस्तानी सेना डर रही है। इन इलाकों पर प्रभावी तरीके से टीटीपी का कंट्रोल हो गया

है। रिपोर्ट के मुताबिक टीटीपी के आतंकियों ने खैबर प्रांत के कबायली जिलों के रास्ते में कई जगहों पर चेकप्वाइंट बना लिया है और उन्हें रोकने में पाकिस्तानी सेना बुरी तरह से फेल साबित हो रही है। इसमें पेशावर- खैबर रोड, हांगू-कुर्रम कॉरिडोर, बन्नू-डेरा इस्माइल खान रास्ता जो वजीरिस्तान को जाता है, शामिल है। स्थानीय सूत्रों का कहना है कि टीटीपी के आतंकी खुलेआम वाहनों की जांच कर रहे हैं और लोगों के पहचान पत्र को देख रहे हैं। इसके अलावा वे जिहाद के लिए चंदा भी जमा कर रहे हैं। यही नहीं टीटीपी के मीडिया विंग ने वीडियो जारी करके दिखाया है कि कैसे उसके लड़ाके इन चेकपोस्ट पर तैनात हैं और खुलकर जांच कर रहे हैं। इसके जरिए टीटीपी के आतंकी अपने कंट्रोल को दिखा रहे हैं और पाकिस्तानी सरकार को चुनौती दे रहे हैं। टीटीपी के एक आतंकी कमांडर ने पाकिस्तानी सेना प्रमुख को खैबर पख्तूनख्वा आने के लिए चुनौती दी है। उसने कहा है कि अगर असीम मुनीर मर्द हैं और मां का दूध पिया है तो वह खैबर आकर दिखाएं। खुफिया सूत्रों ने चेतावनी दी है कि टीटीपी के आतंकियों ने अपने परंपरागत ग्रामीण इलाके से बाहर निकलकर पेशावर के शहरी इलाकों में अपने अभियान चलाने शुरू कर दिए हैं। टीटीपी के आतंकी अब बडाबेर, मत्तानी और बोरा रोड कॉरिडोर पर पहुंच गए हैं जो अब तक पाकिस्तानी सेना के कब्जे में था।

टीटीपी को सपोर्ट कर रहे पाकिस्तानी कबायली

तहरीक-ए-तालिबान के आतंकी अपना प्रशासनिक ढांचा खड़ा कर रहे हैं और ठीक वही रणनीति अपना रहे हैं जो तालिबान ने अफगानिस्तान पर अपने कब्जे के लिए अपनाई थी। इसके तहत वे पहले ग्रामीण इलाके पर कब्जा कर रहे हैं और फिर शहरों की ओर बढ़ रहे हैं। हालत यह है कि पाकिस्तानी सैनिक घने कबायली इलाके में तैनाती से भाग रहे हैं। इसके पीछे वजह यह है कि टीटीपी के हमले में बहुत बड़ी तादाद में पाकिस्तानी सैनिक मारे गए हैं। यही नहीं स्थानीय कबायली टीटीपी का खुलकर सपोर्ट करते हैं। पंजाबी मूल के सैनिक वहां जाने से भी डर रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि खैबर पख्तूनख्वा की चुनौती पाकिस्तानी सेना के लिए सबसे बड़ी बन गई है।

धार, सतना समेत एमपी के 9 जिलों में बारिश

● लो प्रेशर एरिया की एक्टिविटी से मौसम बदला; 25, 26-27 अक्टूबर को ज्यादा असर

भोपाल (नप्र)। देश के दक्षिणी हिस्से में लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र) एक्टिव है। इसका असर मध्यप्रदेश में भी देखने को मिल रहा है। पिछले 24 घंटे में धार, सतना समेत प्रदेश के 9 जिलों में बारिश हुई। वहीं, भोपाल समेत कई जिलों में बादल छाए रहे। मौसम विभाग के अनुसार, 25, 26 और 27 अक्टूबर को सिस्टम का असर ज्यादा रहेगा। मौसम विभाग के अनुसार, सिस्टम दक्षिण-पूर्व अरब

सागर से होते हुए उत्तर-पूर्व हिस्से की तरफ बढ़ रहा है। अगले 24 घंटे से ही एमपी में असर दिखाई देने लगेगा, लेकिन 25 से 27 अक्टूबर के बीच प्रदेश के लगभग आधे हिस्से में हल्की बारिश, गरज-चमक और आंधी की स्थिति बनी रहेगी। इससे पहले शुक्रवार को बड़वानी, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में हल्की बारिश हो सकती है। वहीं, पिछले 24 घंटे में अशोकनगर, छतरपुर, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, सतना, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी और धार जिलों में हल्की बारिश दर्ज की गई।

भोपाल में बादल छाए, कई जिलों में लुढ़का पारा- भोपाल में बादल छाए रहे। इस वजह से दिन के तापमान में मामूली गिरावट हुई है। यहां पारा 31.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इंदौर में 32 डिग्री, उज्जैन में 34 डिग्री, ग्वालियर में 33.8 डिग्री और जबलपुर में अधिकतम तापमान 31.9 डिग्री रहा। बैतूल, भोपाल, दतिया, गुना, खंडवा, खरगोन, शिवपुरी, दमोह, जबलपुर, रीवा, सतना, सीधी, उमरिया में भी दिन के तापमान में कमी देखने को मिली। इधर, रात के तापमान में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। इस वजह से तेज ठंड का असर नहीं है।

एमपीआरडीसी की सड़कों के ब्लैक स्पॉट सुधरेंगे

● एमडी ने 30 अक्टूबर तक शॉर्ट टर्म सुधार के दिए निर्देश, 15 करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट्स का रिव्यू

भोपाल (नप्र)। एमपीआरडीसी की सड़कों में चिह्नित ऐसे ब्लैक स्पॉट्स (दुर्घटना संभावित स्थान) को जल्द दुरुस्त किया जाएगा। जहां कई घटनाएं हो चुकी हैं और लोगों की जान जा चुकी है। ब्लैक स्पॉट्स के स्थायी समाधान के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लेते हुए इस पर अमल के लिए निर्देशित किया गया है। साथ ही 30 अक्टूबर तक ब्लैक स्पॉट के शार्ट टर्म उपायों का प्रदेशभर में प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए गए हैं। मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के एमडी भरत यादव की मौजूदगी में परियोजनाओं की समय सीमा को लेकर हुई बैठक में 15 करोड़ से अधिक लागत वाली परियोजनाओं की प्रगति की

समीक्षा की गई। बैठक में परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति, कार्यों की गुणवत्ता, टाइम लिमिट वर्क प्रोग्रेस, काम में आने वाले अवरोध और सुरक्षा मानकों के साथ लंबित कार्यों के निराकरण पर चर्चा की गई। इस बैठक में प्रदेश भर में चिह्नित ब्लैक स्पॉट्स (दुर्घटना संभावित स्थलों) के शार्ट एवं लॉन्ग टर्म सुधार संबंधी व्यवस्थाओं पर चर्चा कर उसे ठीक करने के लिए कहा गया। इस दौरान मप्र सड़क विकास निगम के प्रबंध संचालक भरत यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए DDHI और सेव लाइफ फाउंडेशन के सुझावों के अनुसार ब्लैक स्पॉट्स के स्थायी समाधान के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार की जाए। इसके अलावा 30 अक्टूबर तक ब्लैक स्पॉट के शार्ट टर्म उपायों का प्रदेशभर में प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन किया जाए। प्रबंध संचालक यादव ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन और लोकपथ एप पर आने वाली शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए समय-सीमा के भीतर उनका निराकरण सुनिश्चित किया जाए। साथ ही गुणवत्ता, सुरक्षा और समयबद्धता पर विशेष ध्यान देते हुए कार्यों की प्रगति तेज की जाए।

● 9 महीने पहले धंसे भोपाल-राजगढ़ पार्वती पुल पर लग गया जाम, वैकल्पिक मार्ग भी पानी में डूबा

जिस पुल पर प्रशासन ने आवाजाही रोकी, गुजरे हजारों लोग

भोपाल (नप्र)। भोपाल और राजगढ़ जिले की सीमा पर पार्वती नदी पर बना करीब 49 साल पुराना पुल धंस जाने के कारण प्रशासन ने इसे 9 महीने पहले बंद किया था, बावजूद इसके गुरुवार को हजारों लोग उसी धंसे हुए पुल को पार करते नजर आए। बाइक, ऑटो, कार और पैदल चलने वाले लोगों की इतनी भीड़ थी कि पुल पर लंबा जाम लग गया। जिसका वीडियो भी सामने आया हैं।

जाम लगने की सूचना के बाद नरसिंहगढ़ और नजीराबाद का पुलिस बल मौके पर पहुंचा और समझाइश दी, लेकिन लोग जोखिम लेकर पुल पार करते देखे गए। बता दें ये पुल नरसिंहगढ़ को नजीराबाद, बैरसिया, विदिशा और भोपाल से जोड़ता है।

मेले के लिए जर्जर पुल पर उमड़ी भीड़

पार्वती नदी किनारे बसे बरखेड़ी गांव में भाई दूज पर पारंपरिक मेला आयोजित किया गया था। हर साल की तरह इस बार भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु और व्यापारी वहां पहुंचे। गांव तक पहुंचने का सबसे नजदीकी और सुविधाजनक रास्ता यही पुल है, इसलिए लोग वर्षों से इसी मार्ग का उपयोग करते आ रहे हैं। यही वजह रही कि मेले में शामिल होने जा रहे हजारों लोग गुरुवार को यही जर्जर पुल पार करते हुए पहुंच गए और देखते ही देखते पुल पर भारी भीड़ जमा हो गई।

नदी के वैकल्पिक मार्ग पर फंसी बस- नदी में बने वैकल्पिक मार्ग से गुजरने वाली यात्री बस का वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में दिख रहा है कि ड्राइवर ने पानी होने के बावजूद बस निकालने की कोशिश की, लेकिन बस फंस गई। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है और लोग इसे लेकर बैरसिया और नरसिंहगढ़ के विधायकों को ट्रोल कर रहे हैं।

भोपाल-राजगढ़ बॉर्डर पर बना पुल

यह पुल साल 1976 में बना था और नरसिंहगढ़ को बैरसिया तहसील से जोड़ता है। भोपाल और विदिशा जाने के लिए यह सबसे सीधा मार्ग है। इस वजह से इसकी आर्थिक और सामाजिक महत्व नरसिंहगढ़ के लिए बेहद अहम है। पुल बंद होने के कारण ग्रामीणों को 30 किलोमीटर लंबा चक्कर लगाना पड़ रहा है। इससे करीब 50 गांव और 65-70 हजार लोग रोजाना प्रभावित हैं। किसानों को मंडी तक फसल पहुंचाने में खर्च बढ़ रहा है। साथ ही, आपातकालीन सेवाओं के लिए एम्बुलेंस को 45 मिनट अतिरिक्त सफर करना पड़ रहा है।

अस्थायी वैकल्पिक रास्ता भी डूब गया

मध्य प्रदेश सड़क विकास प्राधिकरण (एमपीआरडीसी) ने जनवरी 2025 में पार्वती नदी के इस पुल को क्षतिग्रस्त घोषित किया था। इसके बाद पुल के दोनों ओर ईंटों की दीवारें लगाकर आवागमन रोकने का प्रयास किया गया, लेकिन स्थानीय लोगों ने दीवारें तोड़ कर मार्ग का उपयोग जारी रखा। नदी के नीचे अस्थायी वैकल्पिक रास्ता भी बनाया गया, जो बारिश के समय यह पानी में डूब गया। ऐसे में लोग करीब 30 किलोमीटर लंबा चक्कर लगाकर ही सफर कर पाते हैं, इससे बचने लोग जान जोखिम में डाल रहे हैं।

नौरादेही में चीते बसाने कैंपा फंड से चार करोड़ मंजूर

● एनटीसीए ने दी पहली किस्त, शिफ्टिंग से पहले होगा फेंसिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर का काम

भोपाल (नप्र)। नौरादेही अभयारण्य (वीरांगना रानी दुर्गावती टाइगर रिजर्व) को चीतों का नया ठिकाना बनाने के लिए एनटीसीए (नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी) ने सेंट्रल कैंपा फंड से 4 करोड़ रुपए जारी किए हैं। यह पहली किस्त होगी। दूसरी किस्त के लिए एनटीसीए 3 करोड़ रुपए देगा। इसके बाद 2339 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले प्रदेश के सबसे बड़े टाइगर रिजर्व नौरादेही में चीते बसाए जाएंगे।

नौरादेही की सिंघपुर, मोहली और झापा फॉरेस्ट रेंज को चीतों के सबसे बेस्ट माना गया। एनटीसीए की टीम जल्द इन तीनों रेंज का दौरा करेगी। सागर और दमोह जिलों में फैले नौरादेही के जंगलों में 4 क्वारैंटाइन बोमा

और 1 सॉफ्ट रिलीज बोमा तैयार किए जाएंगे। इसके लिए फेंसिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट का काम जल्द शुरू होगा। सिंघपुर रेंज को क्वारैंटाइन बोमा साइट के रूप में चुना जा सकता है।

13 गांव होंगे विस्थापित

चार महीने पहले दौरे पर आई एनटीसीए की टीम के वन उप महानिरीक्षक वैभव माथुर की मौजूदगी वाली निरीक्षण टीम जिन तीन रेंज मोहली, झापा और सिंगपुर को चीतों के रहवास के लिए उचित माना है, उसमें कुल 13 गांव हैं। जहां के लोगों का पुनर्वास किया जाएगा, यहां 30 किलोमीटर के क्षेत्र को बाड़ेबंदी भी की जाएगी। इन 13 गांवों के पुनर्वास के लिए 150 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि मांगी गई है। अभयारण्य में रिक्त पदों को भरने के लिए नौरादेही में पशु चिकित्सकों की भी तैनाती की जाएगी।

अधिकारियों के अनुसार नौरादेही अभयारण्य में कुल 93 गांव थे, जिनमें से 44 को बाहर स्थानांतरित कर दिया गया है। 49 गांव अभी भी अभयारण्य के भीतर हैं। वन विभाग वर्तमान में तीन और गांवों के लोगों के पुनर्वास का काम कर रहा है जबकि मोहली गांव सहित सात अन्य गांवों को इस साल के अंत में पुनर्वास के लिए चुना जाएगा।

2022-23 में कूनो में लाए गए हैं चीते

वर्ष 1952 में भारत में चीतों के विलुप्त होने के बाद सितंबर 2022 में नामीबिया से 8 चीतों को लाया गया था। फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से और 12 चीतों को लाया गया। इन्हें भी कूनो में रखा गया जिससे भारत में चीतों की कुल संख्या 20 हो गई। पिछले दो वर्षों में इन चीतों ने कुल 26 शावकों को जन्म दिया, लेकिन केवल 19 ही जीवित बचे। 12 वयस्क और 19 शावकों के साथ, भारत में चीतों की कुल संख्या वर्तमान में 31 है।

नांदेड़ से पानीपत के बीच 2 ट्रिप स्पेशल ट्रेनें

● भोपाल रेल मंडल से होकर गुजरेंगी यह ट्रेनें, 16 स्टेशनों पर होगा ठहराव

भोपाल (नप्र)। दिल्ली में आयोजित होने वाले 78वें अंतरराष्ट्रीय निरंकारी संत समागम के मद्देनजर रेल प्रशासन ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नांदेड़ से पानीपत के बीच दो ट्रिप स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। ये ट्रेनें भोपाल मंडल के इटारसी, रानी कमलापति और बीना स्टेशनों से होकर गुजरेंगी। सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया ने बताया कि बढ़ते यात्री भार को देखते हुए विभिन्न मार्गों पर विशेष ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे पूजा स्पेशल ट्रेनों के ठहराव और समय की जानकारी के लिए रेल मदद 139, एनटीईएस ऐप या रेलवे की वेबसाइट पर अपडेट देखें।

नांदेड़-पानीपत स्पेशल ट्रेन का समय- गाड़ी संख्या 07635 नांदेड़-पानीपत स्पेशल बुधवार और शनिवार को नांदेड़ से सुबह 7:40 बजे रवाना होगी। यह ट्रेन इटारसी रात 11:40 बजे, रानी कमलापति 1:40 बजे, बीना 4:10 बजे, नई दिल्ली 3:00 बजे दोपहर और पानीपत शाम 5:30 बजे पहुंचेगी।

समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार, बाजरा उपार्जन के लिए 8 लाख 53 हजार 911 किसानों ने कराया पंजीयन

भोपाल (नप्र)। समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार, बाजरा उपार्जन के लिए इस वर्ष 8 लाख 53 हजार 911 किसानों ने पंजीयन कराया है। पिछले वर्ष 7 लाख 84 हजार 845 किसानों ने पंजीयन कराया था। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि इस वर्ष विगत वर्ष की तुलना में लगभग 69 हजार अधिक किसानों ने पंजीयन कराया है। धान उपार्जन के लिये 8 लाख 47 हजार 830, ज्वार के लिये 2601 और बाजरा के लिये 5 हजार 545 किसानों ने पंजीयन कराया है। उन्होंने बताया है कि धान का समर्थन मूल्य 2369 रूपये, ज्वार का 3699 और बाजरा का 2775 रूपये है।

मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत एवं तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्रों पर और एम.पी. किसान एप पर की गई थी।

26 अक्टूबर को उज्जैन से

शुरू होगी ईडब्ल्यूएस आरक्षण क्रांति

● करणी सेना ने रखीं 9 मांगें, कहा-स्वर्ण समाज को उसके हक से वंचित किया जा रहा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में 26 अक्टूबर से स्वर्ण समाज की ओर से ईडब्ल्यूएस (आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) आरक्षण के सरलीकरण, समान अवसर और न्यायोचित सुधार को लेकर एक बड़ा आंदोलन शुरू होने जा रहा है। इसकी शुरुआत बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन से होगी। करणी सेना प्रमुख अनुराग प्रताप सिंह राघव ने बताया कि यह ईडब्ल्यूएस क्रांति स्वर्ण समाज के अधिकारों की पुनःस्थापना के लिए एक निर्णायक कदम साबित होगी।

उन्होंने कहा कि सरकार ने भले ही 10 प्रतिशत ईडब्ल्यूएस आरक्षण लागू किया हो, लेकिन कठोर शर्तों और सीमित लाभ के कारण स्वर्ण समाज इसका फायदा नहीं उठा पा रहा है। करणी सेना की मांग है कि ईडब्ल्यूएस आरक्षण की सीमा 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत की जाए और इसमें मौजूद जटिल शर्तों

को हटाया जाए। ताकि सामान्य वर्ग के पात्र परिवारों को वास्तविक लाभ मिल सके।

9 प्रमुख मांगें

- **आयु सीमा में छूट:** अन्य आरक्षित वर्गों की तरह ईडब्ल्यूएस वर्ग को भी प्रतियोगी परीक्षाओं में 5 वर्ष की आयु सीमा छूट मिले।
- **अतिरिक्त प्रयास:** यूपीएससी सहित सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में ईडब्ल्यूएस उम्मीदवारों को अतिरिक्त प्रयासों की अनुमति दी जाए।
- **शिक्षक भर्ती नियुक्ति:** 2018 की उच्च माध्यमिक शिक्षक भर्ती में चयनित ईडब्ल्यूएस वर्ग के 848 अभ्यर्थियों की नियुक्ति, न्यायालय के आदेश के अनुसार तत्काल की जाए।
- **कैरी फॉरवर्ड का अधिकार:** यदि किसी वर्ष ईडब्ल्यूएस की रिक्तियां नहीं भर पातीं, तो उन्हें अगले वर्ष तक बैकलॉग के रूप में रखा जाए।
- **कंडिका 6.3 संशोधन:** ईडब्ल्यूएस की रिक्तियां अगले वर्ष तक सुरक्षित रखने के लिए इस प्रावधान को बदला या हटाया जाए।
- **छात्रवृत्ति लाभ:** मेधावी विद्यार्थी योजना, आकांक्षा योजना, प्रसूति सहायता योजना जैसी राज्य योजनाओं में ईडब्ल्यूएस विद्यार्थियों और परिवारों को शामिल किया जाए।
- **प्रमाण पत्र की वैधता:** ईडब्ल्यूएस प्रमाणपत्र की वैधता अवधि राजस्थान की तरह 3 वर्ष की जाए, ताकि हर वर्ष नवीनीकरण की परेशानी से राहत मिल सके।
- **ईडब्ल्यूएस कल्याण बोर्ड का गठन:** राज्य स्तर पर 'ईडब्ल्यूएस कल्याण बोर्ड' बनाया जाए और जन-जागरूकता अभियान चलाया जाए।
- **शिक्षा का समान अधिकार:** आरटीई अधिनियम के तहत ईडब्ल्यूएस वर्ग के बच्चों को भी निजी और शासकीय स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा का समान अवसर दिया जाए।

देपालपुर की ऐतिहासिक सूरजकुंड बावड़ी का हुआ जीर्णोद्धार

प्राचीन बावड़ी का देवी अहिल्याबाई होल्कर के काल में भी हुआ था जीर्णोद्धार

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने राज्य सरकार के जल गंगा संवर्धन अभियान में प्रदेश के सभी नगरीय निकायों की जल संरचनाओं के संरक्षण और जीर्णोद्धार की पहल जनभागीदारी से की थी। इसके अच्छे परिणाम भी सामने आये हैं। आज नगरीय निकायों के नागरिकों विशेषकर युवाओं ने जल संरचनाओं के संरक्षण का संकल्प लिया है।

देपालपुर की सूरजकुंड बावड़ी- इंदौर जिले के देपालपुर में मंगलेश्वर महादेव मंदिर परिसर में स्थित ऐतिहासिक सूरजकुंड बावड़ी अब एक बार फिर अपने प्राचीन स्वरूप में लौट आई है। यह बावड़ी ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। स्थानीय मान्यता के अनुसार इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में परमार वंश के शासन काल के दौरान किया गया था। इसके बाद लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर सूरजकुंड बावड़ी का पुनर्निर्माण कराया, जिससे यह बावड़ी नगर वासियों के लिये स्वच्छ जल का प्रमुख स्त्रोत बन गई। समय के साथ इस ऐतिहासिक बावड़ी की देख-रेख में कमी आयी और यह बावड़ी सूखने की कगार पर पहुंच गई। बावड़ी की उपेक्षा के कारण इसकी सीढ़ियां और मार्ग भी क्षतिग्रस्त हो गये।

स्थानीय समुदाय की भागीदारी एवं संकल्प

सूरजकुंड बावड़ी के संरक्षण में स्थानीय नागरिकों और युवाओं ने संकल्प के साथ काम किया है। उनका कहना है कि हम सब ऐतिहासिक बावड़ी को अब कभी गंदा नहीं होने देंगे। यह हमारी ऐतिहासिक धरोहर है, जिसे हमारे बुजुर्गों ने देखा और संजोया है, हम सब चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी ऐतिहासिक बावड़ी पर गर्व करें।

अमृत 2.0 में हुआ कार्य

नगरीय विकास की अमृत 2.0 योजना में ऐतिहासिक बावड़ी के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया। ग्राम वासियों के उत्साह ने भी इस कार्य को गति दी। अब यह जल संरचना केवल देपालपुर के लिये ही नहीं बल्कि प्रदेशभर के लिये प्रेरणा स्त्रोत बनकर उभरी है। जल संरक्षण का उद्देश्य पानी के साथ पर्यावरणीय स्थिरता, जैव विविधता संरक्षण और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के सुदृढ़ीकरण का भी है। बावड़ी के संरक्षण से जल गुणवत्ता एवं मात्रा में सुधार, क्षतिग्रस्त सीढ़ियों एवं मार्गों का पुनर्निमाण, प्लास्टिक एवं ठोस अपशिष्ट की सफाई, हरियाली एवं लैंडस्केपिंग कार्य के साथ स्थानीय समुदाय की सहभागिता और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा की गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी जल संरक्षण के क्षेत्र में जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार पर जोर दिया है।

आरएसएस प्रचारक को 'बात और बंदा खत्म' करने की धमकी

भोपाल (नप्र)। शाजापुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वरिष्ठ प्रचारक सोहन परमार को फोन पर गालियां और जान से मारने की धमकी मिली है। इस मामले में शाजापुर पुलिस ने एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

परमार ने पुलिस को बताया कि यह घटना 20 अक्टूबर 2025 की रात 10:22 बजे संघ कार्यालय लालपुरा, शाजापुर में हुई। उस समय वे राज सोनी, अजय परमार और गिरिराज पाटीदार के साथ कक्ष में बैठे थे। उन्हें एक अज्ञात नंबर से फोन आया, जिसे उन्होंने स्पीकर पर डाल दिया था।

फोन करने वाले व्यक्ति ने परमार को आरएसएस कार्यकर्ता और हिंदू समाज का रक्षक बताते हुए गालियां दीं। उसने हिंदू समाज और संघ के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया और जान से मारने की धमकी देते हुए कहा, तू मिल, तेरा गला रेतकर खत्म कर दूंगा।

संपादकीय

टीम हेमंत : संतुलित कार्यकारिणी

मध्यप्रदेश भाजपा की बहुप्रतीक्षित कार्यकारिणी अंततः तीन माह बाद घोषित हो ही गई। नई 25 सदस्यीय कार्यकारिणी में लगभग आधे से ज्यादा लोग पुराने ही हैं। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने अपने स्वभाव के अनुरूप सभी को 'एडजस्ट' करने का प्रयास किया है। माना जा रहा है कि खंडेलवाल ने संघ और संगठन मंत्री हितानंद शर्मा की सिफारिशों को ज्यादा महत्व दिया है। मोटे पर कार्यकारिणी में सभी बड़े नेताओं की अनुशंसाओं को अहमियत दी है। जानकारों के अनुसार नई कार्यकारिणी में संगठन मंत्री हितानंद शर्मा के पांच, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के चार, केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के दो, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के दो तथा विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर के दो समर्थकों को कार्यकारिणी में एडजस्ट किया गया है। गुरुवार को भाजपा केंद्रीय मुख्यालय से यह सूची जारी की गई है। टीम हेमंत में लता वानखेड़े, सुमेर सोलंकी, गौरव रणदिवे और राहुल कोठारी बने प्रदेश महामंत्री बनाया गया है। खंडेलवाल के अध्यक्ष बनने के 3 महीने 21 दिन बाद टीम घोषित की गई है। अहम बात यह है कि मौजूदा मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल को उनके अच्छे परफार्मेंस और मीडिया से अच्छे सम्बंधों के कारण दोबारा मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। गौरतलब है कि राज्य में पिछले विधानसभा चुनाव से पहले लोकेंद्र पाराशर को हटाकर आशीष अग्रवाल को यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसी प्रकार रीवा संभाग के संगठन मंत्री रहे श्याम महाजन को प्रदेश कार्यालय मंत्री बनाया गया है, जबकि अखिलेश जैन कोषाध्यक्ष बनाए गए हैं। चार मोर्चों के अध्यक्ष भी बदले गए हैं। पुराने चेहरों की बात करें तो रणबीर रावत महामंत्री से उपाध्यक्ष बने वीडी शर्मा की टीम में प्रदेश महामंत्री के तौर पर काम कर चुके पूर्व विधायक रणबीर सिंह रावत अब उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। विधायक मनीषा सिंह को प्रमोट कर प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है। पूर्व में संभागीय संगठन मंत्री रहे शैलेंद्र बरुआ अब बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष बने हैं। सीएम के करीबी प्रभुलाल जाटव और ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थक पूर्व मंत्री प्रभुराम चौधरी प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। कांत देव सिंह एक बार फिर से प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। मध्य प्रदेश युवा कल्याण आयोग के पूर्व अध्यक्ष निशांत खरे भी उपाध्यक्ष बने हैं। भाजपा नेता राहुल कोठारी का महत्व और बढ़ सकता है। उन्हें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का करीबी माना जाता है। राहुल 2016 में बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता बने और 2020 से प्रदेश मंत्री हैं। चर्चा है कि कोठारी को प्रदेश कार्यालय प्रभारी बनाया जा सकता है। लेकिन पूर्व अध्यक्ष वीडी शर्मा के कार्यकाल में महामंत्री भगवान दास सबनानी कार्यालय प्रभारी थे। उन्हें नई कार्यकारिणी में जगह नहीं मिली है। पूर्व अध्यक्ष वीडी शर्मा की कार्यकारिणी में 14 उपाध्यक्ष, 14 मंत्री और 5 महामंत्री थे। नई कार्यकारिणी में 13 पदाधिकारी पिछली टीम से दोबारा शामिल किए गए हैं। 16 नए कार्यकर्ताओं को स्थान मिला है। नई टीम में 7 महिलाओं को भी कार्यकारिणी में प्रतिनिधित्व दिया गया है। प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने उपाध्यक्ष और मंत्री के कुछ पद खाली रखे हैं, ताकि भविष्य में संगठनात्मक जरूरत और संतुलन के अनुसार नए चेहरों को अवसर दिया जा सके। वैसे पिछले अध्यक्षों के कार्यकारिणी गठन में लगने वाले समय की तुलना की जाए तो हेमंत खंडेलवाल के काफी जल्दी यानी पदभार संभालने के मात्र 3 माह 21 दिन में कार्यकारिणी का गठन कर दिया है। हालांकि नई कार्यकारिणी को लेकर कुछ असंतोष भी है। लेकिन यह भी सच है कि सभी को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। फिर भी कार्यकारिणी में जातीय समीकरण और आगामी राजनीतिक चुनौतियों का मुकाबला करने के जरूरत को देखते हुए यह कार्यकारिणी काफी हद तक संतुलित और परफार्मर मानी जा सकती है।

नजरिया

अजय कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

योगी की संघ और संगठन से दूरी के परिणाम

योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही प्रशासनिक स्तर पर कठोर निर्णयों के लिए ख्याति अर्जित की है। अपराध नियंत्रण, अवैध निर्माणों पर कार्रवाई, माफिया राज के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति और हिंदू गौरव के मुद्दों पर उनकी आक्रामक छवि ने उन्हें जनता में लोकप्रिय बनाया। उन्होंने नौकरशाही को अपने नियंत्रण में रखा और निर्णय प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप को सीमित किया। यही कारण है कि जनता के बीच उनकी छवि 'कड़े प्रशासक' और 'निर्भीक नेता' की बन चुकी है। परंतु यह वही शैली है जिससे संगठन के भीतर असहजता भी महसूस की जा रही है। भाजपा के कई विधायक और संगठन के जिम्मेदार पदाधिकारी बार-बार यह शिकायत करते हैं कि योगी सरकार में उनकी सुनवाई नहीं होती। थानों से लेकर जिला स्तर के अफसरों तक, विधायकों को हस्तक्षेप का अधिकार लगभग समाप्त हो चुका है।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में योगी आदित्यनाथ आज एक ऐसा नाम बन चुके हैं, जो अनुशासन, प्रशासनिक सख्ती और हिंदुत्व के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। 2017 में, जब उन्होंने राज्य की कमान संभाली थी, तब यह माना जा रहा था कि संघ और भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने एक युवा और दृढ़ नेतृत्व को आगे रखा है, जो कानून व्यवस्था को सुधार सके। लेकिन आज, अपने दूसरे कार्यकाल के तीन साल पूरे करने के बाद, योगी की राजनीतिक यात्रा कई नए संकेत दे रही है, जिसमें उनकी स्वतंत्र कार्यशैली, पार्टी के भीतर की खींचतान, और केंद्र से बढ़ती दूरी स्पष्ट झलकती है।

योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही प्रशासनिक स्तर पर कठोर निर्णयों के लिए ख्याति अर्जित की है। अपराध नियंत्रण, अवैध निर्माणों पर कार्रवाई, माफिया राज के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति और हिंदू गौरव के मुद्दों पर उनकी आक्रामक छवि ने उन्हें जनता में लोकप्रिय बनाया। उन्होंने नौकरशाही को अपने नियंत्रण में रखा और निर्णय प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप को सीमित किया। यही कारण है कि जनता के बीच उनकी छवि 'कड़े प्रशासक' और 'निर्भीक नेता' की बन चुकी है। परंतु यह वही शैली है जिससे संगठन के भीतर असहजता भी महसूस की जा रही है। भाजपा के कई विधायक और संगठन के जिम्मेदार पदाधिकारी बार-बार यह शिकायत करते हैं कि योगी सरकार में उनकी सुनवाई नहीं होती। थानों से लेकर जिला स्तर के अफसरों तक, विधायकों को हस्तक्षेप का अधिकार लगभग समाप्त हो चुका है।

योगी सरकार में दो उपमुख्यमंत्री हैं, केशव प्रसाद मौर्य और बृजेश पाठक। दोनों ही प्रदेश राजनीति के अलग-अलग सामाजिक समीकरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। केशव ओबीसी और बृजेश ब्राह्मण वर्ग से आते हैं। लेकिन पिछले कुछ समय से यह चर्चा आम है कि इन दोनों नेताओं और योगी के बीच संबंध सामान्य नहीं हैं। केशव प्रसाद मौर्य कई बार सोशल मीडिया पर ऐसे ट्वीट कर चुके हैं, जिन्हें राजनीतिक संकेत के रूप में देखा गया। वहीं बृजेश पाठक पिछले कुछ महीनों में अपने अलग कार्यक्रम और कार्यशैली के चलते सीमित राजनीतिक संपर्क बनाए हुए हैं। ये घटनाएँ इस धारणा को मजबूत करती हैं कि योगी ने सरकार को पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखा है, जिससे सहयोगी मंत्री केवल औपचारिक भूमिका निभा रहे हैं।

पिछले कुछ महीनों में केंद्र और लखनऊ के बीच संवाद की कमी पर राजनीतिक हलकों में कई सवाल उठे हैं। केंद्रीय मंत्रियों का उत्तर प्रदेश के दौरों में कमी आना, योगी का राष्ट्रीय कार्यक्रमों से अक्सर अलग रहना और केंद्रीय नेतृत्व के बयानों में योगी का नाम कम आना, इन सब संकेतों ने

यह अटकलें तेज की है कि दिल्ली योगी से बहुत प्रसन्न नहीं है। हालांकि भाजपा का आधिकारिक रुख हमेशा यह कहता रहा है कि केंद्र और राज्य में कोई मतभेद नहीं है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि योगी का आत्मनिर्भर मॉडल, यानी बिना केंद्रीय दबाव के निर्णय लेना, पार्टी की पारंपरिक संरचना को चुनौती देता है। भाजपा का संगठनात्मक ढांचा सामूहिक निर्णय की संस्कृति पर चलता है, जबकि योगी का प्रशासन टॉप-डाउन मॉडल पर आधारित है।

प्रदेश के विधायकों में यह भावना बढ़ रही है कि अफसरशाही के ऊपर उनका नियंत्रण नाममात्र का रह गया है। विधायक अपने क्षेत्र में शिकायतें करते हैं कि थानेदार, एसडीएम या डीएम तक उनकी बात नहीं सुनते। मुख्यमंत्री कार्यालय ने शिकायत निवारण तंत्र तो सशक्त बनाया है, पर ज़मीनी स्तर पर राजनीतिक हस्तक्षेप की गुंजाइश समाप्त कर दी गई है। इससे विधायकों में हीनभावना के साथ नाराज़गी भी बढ़ी है। यही असंतोष तब और बढ़ जाता है, जब मुख्यमंत्री योगी किसी जनप्रतिनिधि की आलोचना पर सीधे कार्रवाई कर देते हैं या उसे सार्वजनिक रूप से नजरअंदाज करते हैं। भाजपा के मूल संगठनात्मक अनुशासन में यह अप्रत्याशित माना जाता है, लेकिन योगी के लिए यह साफ-सुथरा शासन बनाए रखने की नीति का हिस्सा है।

इन सभी घटनाक्रमों से यह स्पष्ट है कि योगी आदित्यनाथ ने खुद को मात्र एक मुख्यमंत्री के रूप में नहीं बल्कि एक राजनीतिक ब्रांड के रूप में स्थापित किया है। योगी मॉडल आज राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा समर्थकों के बीच चर्चा का विषय है। यूपी के कड़े प्रशासनिक मॉडल, हिंदुत्व की वैचारिक नींव और अपराध नियंत्रण में सफलता ने उन्हें जनता में स्वतंत्र पहचान दी है। केंद्र से दूरी या आंतरिक असहजता के बावजूद, योगी की लोकप्रियता में अभी कोई स्पष्ट गिरावट नहीं देखी जा रही है। लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि क्या यह स्वतंत्र छवि भविष्य में पार्टी संरचना के भीतर उन्हें और अलग-थलग कर सकती है? राजनीतिक विश्लेषकों की राय में, यदि योगी संघ और पार्टी दोनों के साथ सामंजस्य बनाए रखने में असफल होते हैं, तो उनकी राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका सीमित हो सकती है।

योगी का नेतृत्व एक स्पष्ट व्यक्तिगत ब्रांड की तरह उभर रहा है। उनके अनुयायी उन्हें हिंदू हृदय सम्राट की उपाधि से देखते हैं, जो भाजपा के पारंपरिक सामूहिक नेतृत्व से अलग दिशा की ओर संकेत करती है। वे कई मायनों में नरेंद्र मोदी के शुरुआती मुख्यमंत्री काल के समान दिखते हैं। मजबूत व्यक्ति छवि, प्रशासनिक नियंत्रण और कठोर निर्णय क्षमता के साथ। किन्तु पार्टी नेतृत्व यह नहीं चाहता कि कोई मुख्यमंत्री राष्ट्रीय स्तर पर केंद्र के समानांतर छवि बनाए। यही कारण है कि केंद्र लगातार संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। संघ परिवार के कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ता भी यह मानते हैं कि योगी को अपनी प्रशासनिक सख्ती के साथ संगठनात्मक समन्वय बढ़ाना चाहिए।

योगी आदित्यनाथ की राजनीति इस समय एक संक्रमण काल से गुजर रही है। वे जनता में लोकप्रिय हैं, लेकिन पार्टी संरचना में उनके बारे में मिश्रित भावनाएँ हैं। प्रदेश में उनके खिलाफ सीधी चुनौती नहीं दिखाई देती, परंतु यह आंतरिक दूरियाँ उनकी राजनीतिक रणनीति को प्रभावित कर सकती हैं। आने वाले दो वर्षों में यदि योगी संगठन, विधायकों और केंद्र के साथ तालमेल मजबूत नहीं कर पाते, तो यह उनकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं पर सीमाएँ लगा सकता है। वहीं यदि वे संवाद और समन्वय के नए रास्ते चुन लेते हैं, तो वे भाजपा के भीतर भविष्य के शीर्ष नेतृत्व में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकते हैं।अभी के लिए यह कहना उचित होगा कि योगी आदित्यनाथ न केवल उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, बल्कि एक उभरते राजनीतिक प्रतीक भी हैं, जिनकी अगली राजनीतिक मंज़िल इस बात पर निर्भर करेगी कि वे सख्त प्रशासक की अपनी पहचान को सर्वस्वीकार्य नेता के रूप में कैसे स्थापित कर पाते हैं।

पर्यावरण

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दिवाली बाद गहराया देशव्यापी प्रदूषण और सजगता

देशव्यापी प्रदूषण गहराने की रिपोर्ट भले ही केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने दी है, लेकिन यह आशंका पूर्व से ही थी कि दिल्ली एनसीआर समेत पूरे देश में वायु प्रदूषण में वृद्धि दर्ज की जाएगी? सांस, दमा और अस्थमा के रोगियों को परेशानी होगी। क्योंकि वायु गुणवत्ता बद से बदतर होने की श्रेणी में पहुंच जाएगी। यह स्थिति तब है, जब दिल्ली में प्रदूषण की समस्या से चिंतित शासन-प्रशासन तो रहता ही है, सर्वोच्च न्यायालय की चिंता भी पटाखों पर प्रतिबंध को लेकर देखी जाती रही है। इसलिए न्यायालय ने हरित पटाखों को चलाने की अनुमति दी थी, लेकिन निगरानी की ऐसी कोई विधि सरकार के पास नहीं है कि हरित पटाखों की ओट में सामान्य पटाखे चलाए ही न जाएं ? ग्रीन पटाखों को लेकर यह धारणा है कि तुलनात्मक रूप में वे सामान्य पटाखों से प्रदूषण मुक्त हैं, लेकिन इनकी पहचान आसान नहीं है। दरअसल पटाखे इतनी बड़ी मात्रा में पूरे देश में बनते हैं कि इनकी गुणवत्ता एवं मानक की परख करना असंभव है। इस दायित्व के निर्वहन की जवाबदेही 'राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान' (नीरी) को है अवश्य, किंतु मानक निर्धारण की नैतिक जुम्मेबारी पटाखे निर्माताओं और फिर उन पर निगरानी सरकारी तंत्र की है, जो अक्सर दायित्व निभाने में लापरवाह रहता है। इसीलिए वायु गुणवत्ता प्रदूषण का सूचकांक दिल्ली में कई स्थानों पर एक्यूआई 351 के पार दर्ज किया गया। हरियाणा के जींद में यह प्रदूषण सबसे अधिक 421 पर दर्ज हुआ है। यही हकीकत हर साल बनी रहती है।

रिपोर्ट के अनुसार राजधानी दिल्ली में सबसे अधिक प्रदूषित हवा बह रही है। दस शहरों में दिल्ली 10वें नंबर पर है। शेष 9 शहरों में 8 हरियाणा और एक राजस्थान का है। यानी दिल्ली के पड़ोसी राज्य हरियाणा की हवा अब देश के राज्यों में सबसे ज्यादा प्रदूषित हो चुकी है। सीपीसीबी देश के 271 नगरों की हवा की गुणवत्ता की निगरानी रखता है। इनमें से 20 नगरों की वायु इस बार दिवाली के बाद अच्छी रही है, जबकि 54 नगरों में संतोषजनक और 103 नगरों में मध्यम स्तर की रही है। दीपावली के बाद दिल्ली में पीएम 2.5 का चौबीस घंटे में औसत 488 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज हुआ, जो पिछले पांच साल में सबसे अधिक है। यह स्थिति तब है, जब हरियाणा एवं पंजाब में 2024 के अनुपात में पराली जलाने की घटनाएं 77.5 प्रतिशत घटी हैं। यहां यह जानने की जरूरत है कि पीएम 2.5 की मात्रा एक्यूआई का ही एक भाग है। एक्यूआई वायु में मौजूद 2.5 पीएम-10 ओजोन व अन्य प्रदूषणकारी गैसों की मात्रा को गणना करके तय किया जाता है। दिल्ली में वैसे भी ठंड की शुरूआत होने के साथ ही हवा गहराने लगती है, और प्रदूषण का संकट बढ़ने लगता है। यह स्थिति लगभग प्रतिवर्ष निर्मित होती है, लेकिन विडंबना है कि इन तथ्यों को जानते-बूझते सरकार नजरअंदाज कर देती है। इसलिए प्रदूषण सुधार के जो चंद उपाय किए जाते हैं, वे बेअसर साबित होते हैं। अतएव प्रदूषण उत्सर्जन के कारण यथावत बने रहते हैं।

हम जानते है कि बच्चे और किशोर आतिशबाजी के प्रति अधिक उत्साही होते हैं और उसे चलाकर आनंदित भी होते हैं। जबकि यही बच्चे वायु एवं ध्वनि प्रदूषण से अपना स्वास्थ्य भी खराब कर लेते हैं। खतरनाक पटाखों की चपेट में आकर अनेक बच्चे आंखों की रोशनी और हाथों की अंगुलियां तक खो देते हैं। बावजूद समाज के एक बड़े हिस्से को पटाखा मुक्त दिवाली रास नहीं आती है। इसीलिए अदालती आदेश के बाद यह बहस चल पड़ती है कि दिल्ली-एनसीआर में खतरनाक स्तर 2.5 पीएम पर प्रदूषण पहुंचने का आधार क्या केवल पटाखे हैं ? सच तो यह है कि इस मौसम में हवा को प्रदूषित करने वाले कारणों में बारुद से निकलने वाला धुआं एक कारण जरूर है, लेकिन दूसरे कारणों में दिल्ली की सड़कों पर वे कारें भी हैं, जिनकी बिक्री निरंतर उछाल पर है। नए भवनों की बढ़ती संख्या भी दिल्ली में प्रदूषण को बढ़ा रहे हैं। पंजाब और हरियाणा में पराली जलाया जाना भी दिल्ली की हवा को खराब करने का एक कारण है। इस कारण दिल्ली के वायुमंडल में पीएम 2.5 का स्तर बढ़ जाता है। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक स्वास्थ्य के लिए बेहतर वायु का स्तर 10 पीएम से कम होना चाहिए। पीएम वायु में घुले-मिले ऐसे सूक्ष्म कण है, जो सांस के जरिए फेफड़ों में पहुंचकर अनेक बिमारियों का कारण बनते हैं।

वायु के ताप और आपेक्षिक आद्रता का संतुलन गड़बड़ा जाने से हवा प्रदूशण के दायरे में आने लगती है। यदि वायु में 18 डिग्री सेल्सियस ताप और 50 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता हो तो वायु का अनुभव सुखद लगता है। लेकिन इन दोनों में से किसी एक में वृद्धि, वायु को खतरनाक रूप में बदलने लगती है। 'राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मूल्यांकन कार्यक्रम' (एनएसीएमपी) के मातहत 'केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल' वायु में विद्यमान ताप और आद्रता के घटकों को नापकर यह जानकारी देता है कि देश के किस नगर में वायु की शुद्धता अथवा प्रदूषण की क्या स्थिति है। मापने की इस विधि को 'पार्टिकुलेट मैटर' मसलन 'कणीय पदार्थ' कहते हैं। प्रदूषित वायु में विलीन हो जाने वाले ये पदार्थ हैं, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और सल्फर डाईऑक्साइड। सीपीसीबी द्वारा तय मापदंडों के मुताबिक उस वायु को अधिकतम शुद्ध माना जाता है, जिसमें प्रदूषकों का स्तर मानक मान के स्तर से 50 प्रतिशत से कम हो। इस लिहाज से दिल्ली समेत भारत के जो अन्य नगर प्रदूषण की चपेट में हैं, उनके वायुमंडल में सल्फर डाईऑक्साइड का प्रदूशण कम हुआ है, जबकि नाइट्रोजन डाईऑक्साइड का स्तर कुछ बड़ा है। सीपीसीबी ने उन नगरों को अधिक प्रदूशित माना है, जिनमें वायु प्रदूशण का स्तर निर्धारित मानक से डेढ़ गुना अधिक है। यदि प्रदूषण का स्तर मानक के तय मानदंड से डेढ़ गुना के बीच हो तो उसे उच्च प्रदूषण कहा जाता है। और यदि प्रदूषण मानक स्तर के 50 प्रतिशत से कम हो तो उसे निम्न स्तर का प्रदूषण कहा जाता है। वायुमंडल को प्रदूषित करने वाले कणीय पदार्थ, कई पदार्थों के मिश्रण होते हैं। इनमें धातु, खनिज, धुएं, राख और धूल के कण मिले होते हैं। इन कणों का आकार भिन्न-भिन्न होता है। इसीलिए इन्हें वर्गीकृत करके अलग-अलग श्रेणियों में बांटा गया है। पहली श्रेणी के कणीय पदार्थों को पीएम-10 कहते हैं। इन कणों का आकार 10 माइक्रोन से कम होता है। दूसरी श्रेणी में 2.5 श्रेणी के कणीय पदार्थ आते हैं। इनका आकार 2.5 माइक्रोन से कम होता है। ये कण शुष्क व द्रव्य दोनों रूपों में होते हैं। वायुमंडल में तैर रहे दोनों ही आकारों के कण मुंह और नाक के जरिए श्वांस नली में आसानी से प्रविष्ट हो जाते हैं। ये फेफड़ों तथा हृदय को प्रभावित करके कई तरह के रोगों के जनक बन जाते हैं। आजकल नाइट्रोजन डाईऑक्साइड देश के नगरों में वायु प्रदूषण का बड़ा कारक बन रही है।

औद्योगिक विकास, बढ़ता शहरीकरण और उपभोगक्तावादी संस्कृति, आधुनिक विकास के ऐसे नमूने हैं, जो हवा, पानी और मिट्टी को एक साथ प्रदूषित करते हुए समूचे जीव-जगत को संकटग्रस्त बना रहे हैं। लेकिन दिवाली पर रोशनी के साथ आतिशबाजी छोड़कर जो खुशियां मनाई जाती है, उनका व्यावहारिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अकेली दिल्ली में पटाखों का कई हजार करोड़ का कारोबार होता है, जो कि देश में होने वाले कुल पटाखों के व्यापार का 25 फीसदी हिस्सा है। इससे छोटे-बड़े हजारों थोक व खेरीज व्यापारी और पटाखा उत्पादक मजदूरों की सालभर की रोजी-रोटी चलती है। इस लिहाज से इस व्यापार पर प्रतिबंध के व्यावहारिक पक्ष पर भी गौर करने की जरूरत है ? यह अच्छी बात है कि शीर्ष न्यायालय सामान्य पटाखों पर रोक के साथ हरित पटाखे चलाने को प्रोत्साहित कर रही है। इससे स्वदेशी हरित पटाखा उद्योग विकसित होगा और भविष्य में दिल्ली को प्रदूषित महानगर होने की श्रेणी से भी मुक्ति मिल जाएगी।

डराने वाला अहिंसक

कटाक्ष

भावेश कानूनगो

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बचपन से हमें यह सिखाया गया है कि अहिंसा परमो धर्मः। इसका अर्थ है कि अहिंसा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। किसी भी प्रकार की हिंसा न करना-मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म या कर्तव्य माना गया है। हिंसा भी कई प्रकार की होती है। पहला बिंदु पढ़कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। उसमें लिखा था कि केवल मारना ही हिंसा नहीं है। किसी के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाना या किसी को डराना भी हिंसा में आता है। अब मुझे बहुत ग्लानि हुई। मैं तो दिन भर किसी न किसी को डराता रहता हूँ। डराने के मामले में मेरी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी है। कल ही पड़ोस में रहने वाली काकी अपने बच्चे को मेरे नाम से डराती पाई गईं- 'नहीं पढ़ेगा तो यह पास वाला भाईसाहब उठा ले जाएगा।' मुझे समझ नहीं आया कि यह मेरी तारीफ़ है या मुझे हिंसक व्यक्ति घोषित किया जा रहा है। पर मैंने सोचा-चलो, मेरे जैसा व्यक्ति भी किसी काम का है, भले ही वह मुझे हिंसक बता रही हो।

दूसरा बिंदु पढ़ा तो मेरा दिल भर आया। उसमें लिखा था कि किसी के साथ भेदभाव करना भी हिंसा की श्रेणी में आता है। मैं कई बार इस प्रकार का भेदभाव कर चुका हूँ। कभी यात्रा करता हूँ और कोई महिला यात्री दिख जाती है तो मैं जल्दी से अपनी सीट छोड़ देता हूँ, जबकि किसी पुरुष यात्री के लिए मैं इतनी आसानी से सीट नहीं छोड़ता, चाहे वह मुझे कितना ही घूरकर यह सोचे कि मैं निष्ठुर प्राणी हूँ। अब मैं इस तरह की भेदभावपूर्ण हरकत नहीं करूँगा। किसी भी सहयात्री के प्रति अपने व्यवहार में समानता रखूँगा; सीट न देकर अपने आप को अहिंसक घोषित करवा लेने जैसा कृत्य नहीं करूँगा। वैसे, गांधीजी ने कहा भी है कि हिंसा का सहारा वही लेता है जिसमें नैतिक साहस की कमी होती है-'यदि कोई तुम्हें एक गाल मारे तो दूसरा गाल आगे कर दो।' मैं उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहा हूँ।

परंतु पूरी तरह उनके बताए मार्ग पर भी नहीं चल सकता। अब वह गांधीजी वाला समय गुजर गया। यदि मैं अहिंसक बनूँ और एक गाल पर थप्पड़ के बाद दूसरा गाल आगे कर दूँ, तो सामने वाला मेरी भद्रता को कमजोरी समझ सकता है और बिना हिचक के दूसरा-तीसरा थप्पड़ दे सकता है। वह इसे अवसर मानकर और आक्रामक हो सकता है। उसे लगेगा-बड़ी-बचत सेल चल रही है। आजकल के सोशल मीडिया का ज़िक्र किए बिना हिंसा की परिभाषा अधूरी रहेगी। सोशल मीडिया के दौर में बहुत से लोग हिंसक रवैया अपना चुके हैं। जरा सी बात पर गाली या ट्रोल कर देना आम बात हो गई है। यदि आप किसी के समर्थक हैं और आपने किसी बात का समर्थन कर दिया तो आपको देश से निकलने की धमकी तक मिल सकती है। जरा सी बात में शब्दों के बाणों से भेद पैदा किए जाएँगे, जैसे आप कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में खड़े हों। हिंसा की परिभाषा के अनुसार किसी को गाली देना, अपमानित करना या बदनाम करना भी हिंसा है। किसी को ब्लॉक कर देना या किसी के संदेश को उसकी अनुमति के बिना हटा देना जैसी हरकतें अब सामान्य हो गई हैं।जब मुझे किसी सोशल मीडिया के महात्मा द्वारा प्रसारित पूरा श्लोक पढ़ने को मिला तो समझ में आया- 'अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तथैव च।' इसका अर्थ थोड़ा विस्तृत लगने लगा-अहिंसा परम धर्म है, पर धर्म की रक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा कुछ संदर्भों में धर्मसम्मत भी मानी गई है। अब द्वंद्व बढ़ गया। क्या धर्म के लिए हिंसा करना उचित है? सोचा कि क्या मैं अपने कर्तव्य या धर्म के नाम पर हिंसा कर सकता हूँ? यानी, इस श्लोक के आधार पर-शिक्षक (अनुशासन के लिए), पुलिस (अपराध निवारण के लिए) और सीमा पर खड़ा सैनिक (रक्षा के लिए)-हिंसा कर सकते हैं। यहाँ तक कि सोशल मीडिया पर कोई एडमिन किसी का संदेश हटा भी सकता है।

हाँ, हिंसा बुरी चीज़ है; परंतु जहाँ व्यावहारिक दृष्टि से हिंसा उचित भी हो सकती है-वहाँ उसकी संभावना को नकारना व्यावहारिक नहीं होगा। यदि मनुष्य प्रतिकार नहीं करेगा तो लोग उसे दबाते रहेंगे। अहिंसा एक आदर्श है पर व्यवहारिक दुनिया में हर परिस्थिति में केवल अहिंसा को अपनाना सरल नहीं होता। जहाँ अन्याय या उपेक्षा से व्यक्तियों की रक्षा करना आवश्यक हो, वहां विवेकीय – और सीमित – प्रतिकार वैध और आवश्यक माना जा सकता है। पर इसे हिंसा का साधन बनाने से पहले नैतिक-साहस, सहानुभूति और संवाद की अंतिम सीमा तक कोशिश करनी चाहिए। यही संतुलन व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर बेहतर परिणाम देगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

(लेखक व्यंग्यकार)

बिहार में सरकार किसकी बनेगी ?

देखो जजमान, बिना भगवान कि इच्छा के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता है, जानते हो ना ? और यह भी सुन लो कि भगवान के आलावा सरकार को कोई नहीं हिला सकता है। भगवान जो हैं मंत्रों के अधीन हैं और मंत्र किसके अधीन हैं यह बताने की जरूरत नहीं है। भगवान को जब तक मंत्र वालों द्वारा कहा नहीं जाए वे खुद भी हिलते नहीं हैं। सोया हुआ कुम्भकर्ण किसी काम का नहीं होता है यह तो आप जानते ही हैं। एक हम ही हैं जो लोक कल्याण के लिए जागते हैं।

ज्योतिषी त्रिकालदर्शी है, वह पिछला अगला सब जानता है लेकिन सबको बताता नहीं है। उसकी विद्या पोथियों के सात तालों में बंद रहती है। ब्रम्हा ने सृष्टि बनाई पर चाबी हमारे पास है। इसलिए ताले खुलवा लेना सबके बस की बात नहीं है।... खैर, बताओ तुम्हारा प्रश्न क्या है? ज्योतिषी जी ने पूछा।

बस इतना जानना चाहते हैं कि बिहार में किसकी सरकार बनेगी पंडी जी? आगंतुक बोले।

किस पार्टी के हो? उन्होंने ताड़ू नजर डालते हुए पूछा।

इसीलिए तो जानना चाहते हैं। सरकार का पता चाल जाए तो हम भी पार्टी डिसाइड कर लेते। अभी समझ में नहीं आ रहा है कि ऊंट किस करवट बैठेगा।

तुम पहले हो जो इतना सोच कर चल रहे हो।

आपके सामने भले ही हम पहले हों, लेकिन पीछे आधा बिहार बाट जोह रहा है।... एक बार पता चल जाए तो सब उसी तरफ लुड़क जाएगा।

लोग अपना दिमाग़ नहीं लगाते हैं क्या!

दिमाग लगाया तभी न आपके पास आए हैं। ... और हमारे दिमाग़ लगाने से पत्ता हिल जाएगा पंडी जी!

नहीं हिलेगा। सारे पत्ते थ्रू प्रापर चेनल हिलते हैं। स्टार्टर बटन हमारे पास है।

तो बताइये किसकी सरकार बनवा रहे हैं ?

मेहनत का काम है। बहुत सारे ग्रहों को काम पर लगाना होगा। पूजा पाठ और पंडी-भोज भी जरूरी है। खर्चा भी बहुत होगा, क्या करें ?

खर्चे की चिंता नहीं कीजिए। एक बार सरकार बन जाए तो इतना देंगे इतना देंगे कि आप भगवान को चौबीसों घंटा बिना रूकावट दौड़ाते रहेंगे।

ठीक है, कुंडलियां लाए हो?

हाँ लाए हैं.... ये लीजिये।

ये! किसकी है?

हमारी है पंडी जी।

तुम बिहार हो या बिहारी लाल?

दोनों नहीं हैं।

तो बिहार की कुंडली लाइए, आरजेड़ी की लाइए, जेडीयू कि लाइए, सीएम, पीएम की लाइए तब ही बता पाएंगे।

कांग्रेस की भी लगेगी?

नहीं, कुछ पार्टियां अपनी कुंडली से नहीं मजबूरियों से चलती रहती हैं।

उनकी पार्टी के पत्ते कैसे हिलते हैं पंडी जी!

पत्ते कहाँ अब। वहाँ एक ही तो पत्ता है।... ओ हेनरी की कहानी पढ़ी है ना 'द लास्ट लीफ'...। आखरी पत्ता।

हाँ, उस कहानी में तो आखरी पत्ते ने जीवन बचा लिया था। यहाँ पार्टी बचेगी?

हमें नहीं पता। पंडी जी बोले।

आप तो कह रहे थे कि ज्योतिषी त्रिकालदर्शी होते है!! एक माह आगे का देखने के लिए कौनो मंतर नहीं है!! मारिए जरा और यदि दिक्कत है तो हमें बताइए हम मार देंगे।

अरे तुम कथा नहीं कर सकते हो, मंतर कैसे मार दोगे!

तो आप मारिये मंतर और अपने ज्ञान की रक्षा कीजिए।

छठ पूजा पर विशेष

डॉ. रामेश्वर मिश्र

छठ पूजा-संस्कृति से विज्ञान तक

छठ पूजा के पीछे निहित वैज्ञानिक सोच भी उतनी ही गहरी है। सूर्य हमारे जीवन का आधार है, जिसकी ऊर्जा के बिना पृथ्वी पर कोई अस्तित्व नहीं रह सकता। वेदों में कहा गया है-'सूर्योऽत्मा जगतस्तस्थुषश्च।' अर्थात् सूर्य चर-अचर समस्त सृष्टि की आत्मा है। छठ पूजा के समय जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देने का अभ्यास स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभदायक है। इस समय सूर्य की किरणें कम तीव्र होती हैं और उनका स्पर्श शरीर में विटामिन D के निर्माण में सहायक होता है। जल में खड़े रहने से शरीर के भीतर का तापमान संतुलित रहता है और त्वचा, आँखों तथा तंत्रिका तंत्र को लाभ पहुँचता है। यह एक प्रकार का वैज्ञानिक ध्यान (सन मेडिटेशन) है जो मानसिक एकाग्रता और आत्मिक शांति प्रदान करता है।

छठ पूजा भारत की जीवंत लोक संस्कृति का वह पर्व है जो आस्था, प्रकृति और विज्ञान को एक सूत्र में बाँध देता है। यह पर्व न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय जीवन-दर्शन, पर्यावरणीय चेतना और वैज्ञानिक सोच का भी प्रतीक है। भारत की मिट्टी में रचे-बसे लोक जीवन में छठ पूजा को सूर्य उपासना और मातृशक्ति की आराधना के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है। विशेषकर बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में यह पर्व लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है। गाँव की गलियों से लेकर नगरों के घाटों तक, हर जगह काँची ह ओ काँची रे छठी मईया और केतकी के फूलवा सुगंध फैले रे जैसे लोकगीतों की गूँज इस पर्व को लोक भावना से जोड़ देती है।

छठ पूजा का आरंभ वैदिक परंपरा से हुआ माना जाता है। सूर्योपासना का उल्लेख वेदों में बार-बार मिलता है। 'गायत्री मंत्र' में भी सूर्य की आराधना ही मुख्य विषय है-'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।' यह मंत्र सूर्य की उस ऊर्जा का स्मरण कराता है जो संपूर्ण सृष्टि को जीवन देती है। वेदों में सूर्य को 'सविता' कहा गया है, जो जीवन और चेतना का स्रोत है। इसी सूर्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और प्रकृति से संतुलन स्थापित करने के लिए छठ पूजा का विधान बना। पौराणिक मान्यताओं में कहा गया है कि पांडवों के वनवास के दौरान द्रौपदी ने छठ व्रत रखकर संकट से मुक्ति पाई थी, वहीं रामायण में भगवान राम और माता सीता द्वारा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य की उपासना का उल्लेख मिलता है। इन कथाओं ने इस पर्व को न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक आधार भी प्रदान किया।

छठ पूजा की सांस्कृतिक महत्ता इसकी लोकधुनों और सामूहिकता में प्रकट होती है। घाटों पर गूँजते लोकगीतों में मातृत्व, भक्ति और प्रकृति के प्रति प्रेम की भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। महिलाएँ 'छठी मईया तोहर महिमा अपार' और 'उग हे सूरज देव भइनी के नहाइल बानी घाटे' जैसे गीत गाते हुए सूर्य और छठी मइया का आवाहन करती हैं। यह लोकसंगीत गाँवों की धूल, जल और जन के साथ गूँथी हुई आत्मा की आवाज़ है। जब सारा समाज एक साथ नदी या तालाब के तट पर एकत्र होता है, तो वहाँ जाति, वर्ग या लिंग का कोई भेद नहीं रह जाता। हर व्यक्ति समान श्रद्धा के साथ सूर्य को अर्घ्य देता है। यही समरसता भारतीय लोकसंस्कृति का मूल है, जो छठ पूजा के माध्यम से जीवंत हो उठती है।

छठ पूजा के पीछे निहित वैज्ञानिक सोच भी उतनी ही गहरी है। सूर्य हमारे जीवन का आधार है, जिसकी ऊर्जा के बिना पृथ्वी पर कोई अस्तित्व नहीं रह सकता। वेदों में कहा गया है-'सूर्योऽत्मा जगतस्तस्थुषश्च।' अर्थात् सूर्य चर-अचर समस्त सृष्टि की आत्मा है। छठ पूजा के समय जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देने का अभ्यास स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभदायक है। इस समय सूर्य की किरणें कम तीव्र होती हैं और उनका स्पर्श शरीर में विटामिन D के निर्माण में सहायक होता है। जल में खड़े रहने से शरीर के भीतर का तापमान संतुलित रहता है और त्वचा, आँखों तथा तंत्रिका तंत्र को लाभ पहुँचता है। यह एक प्रकार का वैज्ञानिक ध्यान (सन मेडिटेशन) है जो मानसिक एकाग्रता और आत्मिक शांति प्रदान करता है।

इस व्रत का एक और वैज्ञानिक पहलू शरीर की शुद्धि से जुड़ा है। लगातार उपवास रखने और सात्विक भोजन ग्रहण करने से शरीर में एक प्रकार का डिटॉक्सिफिकेशन होता है। गुड़, चावल, गन्ना, नारियल और केले जैसे प्रसाद पदार्थों में प्राकृतिक पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जो पाचन तंत्र को स्वच्छ और संतुलित रखते हैं। गाँवों में लोग कहते हैं-'छठ करे जे सच्चे मन से, तन-मन होई पवित्तर।' यह लोकविश्वास केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी सत्य है। छठ पूजा में प्रयुक्त सामग्रियाँ भी पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकूल हैं। मिट्टी के दीपक, बाँस की सूप, गन्ने के डंडे, फल और शुद्ध

अन्न, सब कुछ प्रकृति से प्राप्त होता है और वही फिर प्रकृति को अर्पित किया जाता है। यह जीवन चक्र की निरंतरता का प्रतीक है। व्रती जब नदी या तालाब की सफाई करते हैं और स्नान के लिए घाट सजाते हैं, तो यह न केवल धार्मिक कर्म है बल्कि जल संरक्षण और स्वच्छता का सामाजिक अभियान भी है। छठ पूजा सूर्य की गति और ऋतु परिवर्तन से भी जुड़ी है। कार्तिक और चैत्र माह में यह पर्व तब आता है जब मौसम में परिवर्तन होता है। यह वह समय है जब पृथ्वी सूर्य की किरणों की दिशा में हल्का झुकाव बदलती है और वातावरण में नई ऊर्जा प्रवाहित होती है। ऐसे में सूर्य उपासना न केवल आध्यात्मिक शांति देती है बल्कि जैविक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होती है। भारतीय परंपरा में इसे 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' के सिद्धांत से जोड़ा गया है, अर्थात् जो कुछ शरीर में होता है वही ब्रह्मांड में भी घटित होता है। छठ पूजा इसी विचार को व्यवहार में उतारने का अवसर देती है, जब मनुष्य प्रकृति के साथ एकात्म हो जाता है।

लोकगीतों और परंपराओं में छठी मइया को मातृशक्ति के रूप में देखा जाता है। वे संतान, स्वास्थ्य और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं। लोककथाओं में कहा जाता है- 'छठी मईया के किरपा से घर में हँसी-खुशी बनी रहे।' महिलाएँ इस व्रत को अपने परिवार की मंगलकामना के लिए करती हैं। घाटों पर जब हजारों दीप जलते हैं, तब पूरा वातावरण मातृत्व और श्रद्धा से भर उठता है। यह दृश्य केवल भक्ति का नहीं, बल्कि ऊर्जा और संतुलन का प्रतीक है। छठ पूजा यह सिखाती है कि आस्था और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। जहाँ आस्था मनुष्य को अनुशासन, भक्ति और आत्मसंयम की ओर ले जाती है, वहीं विज्ञान उस आस्था के कारणों को स्पष्ट करता है। सूर्य की पूजा केवल देवता के रूप में नहीं बल्कि जीवन ऊर्जा के रूप में की जाती है। उपवास केवल धार्मिक कर्म नहीं बल्कि शरीर की चिकित्सा है। जल और प्रकृति की आराधना केवल संस्कार नहीं बल्कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी का बोध है। यही कारण है कि छठ पूजा भारतीय संस्कृति में 'संस्कृति से विज्ञान तक' की यात्रा का प्रतीक बन चुकी है। यह पर्व हमें यह भी याद दिलाता है कि मनुष्य और प्रकृति का संबंध केवल उपयोग का नहीं बल्कि सहयोग और सह-अस्तित्व का है। जब व्रती जल में खड़े होकर सूर्य को प्रणाम करता है, तो वह केवल सूर्य को नहीं, बल्कि उस समूची सृष्टि को नमन करता है जो उसे जीवन देती है। वेदों में कहा गया है-'सूर्ये तपत्यहर्निशं लोके, तेन जीवनमिदं जगत्।' अर्थात् सूर्य दिन-रात जगत को जीवन देता है। इसी जीवन का उत्सव है छठ पूजा, जहाँ लोकगीतों की मधुर ध्वनि, जल का स्पर्श, दीपों की लौ और आस्था का प्रकाश मिलकर एक ऐसा दृश्य रचते हैं जो मानवता की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति बन जाता है।

छठ पूजा अंततः यह संदेश देती है कि जब तक सूर्य है, तब तक जीवन है, और जब तक आस्था है, तब तक मानवता है। यह केवल पूजा नहीं, बल्कि मानव, प्रकृति और विज्ञान के बीच संतुलन का उत्सव है।

दृष्टिकोण

डॉ. मनीष कुमार जैसल

लेखक सिनेमा अध्ययन के अध्येता और मीडिया शिक्षक हैं।

क्या हमारे परदे से मिट रहा है दायित्व का बोध

यह वही सिनेमा था जो संविधान की तरह नागरिक की गरिमा पर विश्वास रखता था। नब्बे के दशक में जब उदारीकरण आया, तब सिनेमा ने समाज से मुँह मोड़ लिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कुछ कुछ होता है', 'कभी खुशी कभी ग़म' जैसी फिल्मों ने एक ऐसे भारत की कल्पना रची जहाँ संघर्ष नहीं, उपभोग सर्वोच्च मूल्य था। गाँव और ग़रीबी परदे से गायब होने लगे; किसान की जगह एनआरआई नायक आ गए।

सिनेमा को समाज का आईना माना जाता। यह वह आईना है जिसमें भारत के जनजीवन की आकांक्षाएँ, संघर्ष और सपने झलकते रहे हैं। आज़ादी के बाद जब देश अपने संविधान के मूल्य समानता, न्याय, स्वतंत्रता और बंधुता को धरातल पर उतारने की कोशिश कर रहा था, तब सिनेमा ने उस यात्रा में खुद को सक्रिय भागीदार बनाया। लेकिन जैसे-जैसे दशकों बीते, यह आईना चमकदार तो बना, पर धुँधला भी होता गया। रौशनी बढ़ी, पर दृष्टि कम हुई। आज एक सवाल क्या भारतीय सिनेमा अब भी उस संवैधानिक चेतना से जुड़ा हुआ है, जो कभी उसकी आत्मा थी? हमारे सामने खड़ा है।

भारतीय संविधान और भारतीय सिनेमा दोनों ही लगभग एक ही समय में राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया के अंग बने। पचास और साठ के दशक के फिल्मकारों ने समझा था कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को शिक्षित और जागरूक करने का माध्यम भी है। बिमल रॉय की 'दो बीघा ज़मीन' में श्रम की गरिमा और वर्गीय अन्याय पर सवाल थे, तो महबूब ख़ान की 'मदर इंडिया' में स्त्री-सशक्तिकरण और मातृत्व का नैतिक संकल्प था। सत्यजीत रे की 'पांथेर पांचाली' ने निर्धनता में छिपी मानवीय गरिमा को जिस गहराई से उकेरा, वह किसी दार्शनिक ग्रंथ से कम नहीं था।

ये फ़िल्में संविधान की आत्मा की सिनेमाई व्याख्या थीं जहाँ नागरिक समानता, सामाजिक न्याय और मानवीयता का विचार केन्द्र में था। समाज और सत्ता के बीच टकराव का युग आते ही सिनेमा ने अपना तेवर बदला। 'आंधी', 'गर्म हवा', 'मंज़िल', 'दीवार' और 'अंकुर' जैसी फ़िल्मों ने उस भारत की बेचैनी दर्ज की जहाँ लोकतंत्र तो था, पर बराबरी अब भी अधूरी थी। इमरजेंसी के वर्षों में जब असहमति पर ताले लगे थे, तब सिनेमा ने प्रतिरोध की भाषा ईजाद की। 'गर्म हवा' में विभाजन के बाद के भारत में मुसलमानों की असुरक्षा को इतने सधे तरीके से दिखाया गया कि वह संवैधानिक समानता का मौन घोष बन गया। 'दीवार' के अमिताभ बच्चन ने आर्थिक अन्याय के खिलाफ़ उस जनता की आवाज़ दी जो व्यवस्था से टूट चुकी थी। यह वही सिनेमा था जो संविधान की तरह नागरिक की गरिमा पर विश्वास रखता था। नब्बे के दशक में जब उदारीकरण आया, तब सिनेमा ने समाज से मुँह मोड़ लिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कुछ कुछ होता है', 'कभी खुशी कभी ग़म' जैसी फिल्मों ने एक ऐसे भारत की कल्पना रची जहाँ संघर्ष नहीं, उपभोग सर्वोच्च मूल्य था। गाँव और ग़रीबी परदे से गायब होने लगे; किसान की जगह एनआरआई नायक आ गए।

संविधान जिस समानता और सामूहिकता की बात करता है, सिनेमा वहाँ व्यक्तिगत विलास और निजी प्रेमकथाओं में उलझ गया। यह वह समय था जब संवेदनशील यथार्थ की जगह उपभोक्ता सपनों ने ले ली। इक्कीसवीं सदी के पहले दो दशकों में सिनेमा ने राष्ट्रवाद को नए रूप में बेचना शुरू किया। 'उरी', 'द कश्मीर फाइल्स' और 'एक था टाइगर' जैसी फ़िल्मों ने देशभक्ति को भावनात्मक उत्तेजना में बदल दिया, जहाँ सवाल पूछना 'देशविरोध' मान लिया गया। विचार और मतभेद जैसे संवैधानिक मूल्य सिनेमा की पटकथाओं से धीरे-धीरे गायब होते गए। जिस सिनेमा ने कभी सत्ता से सवाल पूछे थे, वही अब सत्ता का प्रवक्ता बन गया। यह वह मोड़ था जहाँ संविधान की आत्मा स्वतंत्रता और विविधता स्क्रीन से ओझल होने लगी।लेकिन हर अँधेरे के बाद कुछ दीये जलते हैं। बीते एक दशक में ऐसी कई फ़िल्में आईं जिन्होंने सिनेमा की खोई आत्मा को फिर से खोजा। नीरज घायवान की 'मसान' ने गंगा के किनारे जातीय अन्याय की राख में इंसानियत का बीज दिखाया। 'न्यूटन' ने लोकतंत्र के सबसे छोटे कर्म मतदान की गरिमा को ईमानदारी से पकड़ा। अनुभव सिन्हा की 'आर्टिकल 15' ने सीधे संविधान की उस धारा को केंद्र में रखा जो समानता की रक्षा करती है। इन फिल्मों ने यह साबित किया कि संवैधानिक मूल्य केवल कानूनी शब्द नहीं, बल्कि जीवित भावनाएँ हैं।

यशोवर्धन मिश्रा निर्देशित और अशोक मिश्र की लिखी फिल्म 'कटहल' में सान्या मल्होत्रा एक ईमानदार महिला पुलिस अधिकारी के रूप में उस व्यवस्था से टकराती हैं जो जातिवाद, वर्ग और नौकरशाही की जकड़ में बंधी है। यह फ़िल्म व्यंग्य के ज़रिए सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है और हमें संविधान की उस पंक्ति की याद दिलाती है 'राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, जाति या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।' 'लापता लेडिज़' में पितृसत्तात्मक समाज में पहचान और स्वतंत्रता की खोज करती ग्रामीण स्त्रियों की कहानी है। यह फिल्म संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 का जीवंत रूप बन जाती है।

ध्रुव हर्ष की 'इलहाल' कस्बाई भारत के बेरोजगार युवाओं की निराशा को दिखाती है, यह फिल्म चुपचाप याद दिलाती है कि सामाजिक न्याय केवल कानून नहीं, रोज़गार और गरिमा से भी जुड़ा है। इन फ़िल्मों की खासियत यही है कि वे न तो भाषण देती हैं, न नारा लगाती हैं वे संवेदना के ज़रिए हमें सोचने पर मजबूर करती हैं। इन नई फिल्मों ने यह दिखाया है कि सिनेमा जब व्यवस्था से सवाल करता है, तो वह मनोरंजन से आगे बढ़कर लोकतंत्र का साथी बन जाता है। यह सिनेमा संविधान की आत्मा के साथ खड़ा है असहमति को स्थान देता है, विविधता का सम्मान करता है, और नागरिक को सोचने के लिए प्रेरित करता है। आज यह ज़रूरी है कि सिनेमा अपने उस सामाजिक दायित्व को फिर से स्वीकार करे जो उसे जनसंचार का सबसे सशक्त माध्यम बनाता है। संविधान और सिनेमा दोनों ही एक ही मिट्टी से जन्मे हैं एक ने राष्ट्र को कानून दिया, दूसरे ने उसे संवेदना दी।

अगर दोनों के बीच संवाद टूट गया, तो समाज में केवल शोर बचेगा, स्वर नहीं। संविधान विचार की स्वतंत्रता देता है, और सिनेमा उस स्वतंत्रता को दृश्य रूप देता है। जब यह स्वतंत्रता सीमित होती है, तो कला खोखली हो जाती है।सिनेमा तब तक जीवित रहेगा जब तक वह समाज के हाशिये पर खड़े लोगों को आवाज़ देता रहेगा।

संविधान की तरह, सिनेमा का भी धर्म है अन्याय पर सवाल उठाना, समानता का स्वप्न दिखाना और विविधता का उत्सव मनाना। आज जब बाजार और सत्ता दोनों कला की आत्मा पर कब्ज़ा करना चाहते हैं, तब यह और जरूरी हो जाता है कि सिनेमा फिर से जनता का आईना बने क्योंकि जब समाज अपना आईना खो देता है, तो सच को पहचानना असंभव हो जाता है।

अंकुरण

सत्येन्द्र पाण्डेय

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

आयरन गर्ल मना मंडलेकर- आलमपुर से कुआलालम्पुर तक

आयरन गर्ल मना मंडलेकर अभी हाल ही में मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर में आयोजित वर्ल्ड कराटे सीरीज प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करके लौटी हैं और उन्होंने अपने प्रदर्शन से सभी का दिल जीत लिया और देश का नाम रौशन किया है, जैसा कि वे पिछले एक दशक से लगातार करती चली आ रहीं हैं. उन्होंने न केवल कराटे जैसे खेल में अपना परचम लहरा कर अपने जैसी तमाम लड़कियों की राह आसान की है बल्कि तिनका सामाजिक संस्था की स्थापना करके ग्रामीण समाज में बालिकाओं के सशक्तीकरण और लैंगिक समानता की दिशा में बहुत जरुरी काम किया है.

मना मंडलेकर का जन्म मध्यप्रदेश के हरदा जिले में टिमरनी कसबे के नजदीक आलमपुर नाम के एक छोटे से गाँव में हुआ था. एक मेहनतकश लेकिन दलित परिवार में पैदा होने के कारण उन्होंने जाति, वर्ग और लैंगिक तीनों आधार पर होने वाले भेदभावों का सामना किया है और उन सबसे लड़कर अपने व्यक्तित्व को तैयार किया है. उन्होंने उन भेदभावों को अपने बचपन में बहुत नजदीक से देखा है जो उनका परिवार आमतौर पर अनुभव करता था लेकिन उससे निकलने का कोई रास्ता नहीं था, वह भी खासकर तब जबकि परिवार के पास आमदनी के साधन अर्थात खेती आदि के लिए जमीन भी नहीं थी. घर में अक्सर अभाव होते लेकिन इससे भी बढ़कर एक और भेदभाव था जिसका सामान उनके परिवार के पुरुष सदस्यों को नहीं करना पड़ता था, लैंगिक भेदभाव. यह घर में भी मौजूद था और घर के बाहर भी.

पढाई शुरू हुई लेकिन इसी के साथ शुरू हुई मुश्किलें भी. उनको स्कूल के बाद बकरी चराने भी जाना होता था तो पढाई में उतना ध्यान दे पाना मुश्किल होता था. गाँव में 8 वी माध्यमिक तक का स्कूल था, उसके बाद पढाई के लिए सोडलपुर फिर कॉलेज के लिए टिमरनी आना होता. उम्र बढ़ रही थी, थोड़ी बहुत समझदारी भी लेकिन लड़की होने की मुश्किलें तो बहुत तेजी से बढ़ रही थी. आमतौर पर छेड़खानी और फिकरों का सामना करना पड़ता. कुछ करने का मन था पर क्या किया जाये, न उन्हें पता था और न उनके जैसी हालात में किसी और लड़की को. हाई स्कूल तक आते आते यह परेशानी और गंभीर हो गई. लेकिन इससे भी बड़ी परेशानी तो घर में उनके लिए तैयार हो रही थी. वह थी उनकी शादी की चिंता. मना पढाई में अच्छी थीं और मन लगाकर आगे पढना चाहती थीं लेकिन घरवालों के लिए यह आसान नहीं था. उनके लिए सबसे आसान था बड़ी होती लड़की के हाथ पीले कर देना.

लेकिन अब तक मना यह जान चुकी थी कि एक लड़की के लिए हर कदम पर संघर्ष करना पड़ता है- शिक्षा के लिए, सम्मान के लिए, और अपने अधिकारों के लिए. और उन्होंने अपने लिए एक रास्ता बनाना शुरू किया. लें यह बिलकुल आसान नहीं था. अक्सर लोगों ने कहा –'लड़कियों को पढ़ाई की क्या ज़रूरत?' या फिर 'खेल-कूद तो लड़कों का काम है.' लेकिन मना ने इन बातों को कभी सच नहीं माना। उनके भीतर कुछ अलग करने की आग थी। उन्होंने अपने हालात से लड़ना शुरू किया. हर बंद दरवाज़े को अपनी मेहनत से खोला और हर नकारात्मक सोच को अपने हौसले से जवाब दिया.

कठिन परिस्थितियों के बावजूद मना ने अपनी पढ़ाई पूरी की और गाँव की पहली स्नातक महिला बनीं. इसके बाद उन्होंने टिमरनी महाविद्यालय से बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की. यहीं से उनकी सोच और दिशा दोनों बदल गए – उन्होंने तय किया कि वो सिर्फ खुद नहीं, बल्कि समाज की हर उस लड़की के लिए लड़ेंगी जिसे अपने अधिकारों से वंचित रखा गया है.

कराटे की शुरुआतः मना ने साल 2013 में कॉलेज के समय से

कराटे खेलना शुरू किया. शुरुआत में न तो साधन थे, न ही समाज का समर्थन – पर हिम्मत थी, जो कभी नहीं टूटी. अक्सर अभ्यास के दौरान चोटें लगीं, ताने मिले, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी. धीरे-धीरे उन्होंने जिला, राज्य और फिर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई. 2015 में उन्होंने ब्लैक बेल्ट की उपाधि हासिल की और फिर कई प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया. मना की मेहनत और जुनून ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुंचा दिया. उन्होंने कई देशों में भारत का तिरंगा लहराया. वे 2018 में नेपाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में इंटरनेशनल गोल्ड मेडलिस्ट बनी. इसी तरह अगले ही साल भूटान में उन्होंने साउथ एशिया का गोल्ड माडल जीता. 2022 में नई दिल्ली में आयोजित नेशनल मार्शल आर्ट्स गेम्स में फिर से भी वे स्वर्ण पदक विजेता बनी. और हाल ही में, मना ने वर्ल्ड कराटे सीरीज़ में भारत देश का प्रतिनिधित्व किया, जो मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में आयोजित हुई जहाँ उन्होंने पूरी दुनिया के चैंपियनों के बीच अपने कौशल और आत्मविश्वास से सबका दिल जीत लिया. यह तो खैर उनकी उपलब्धियों की महज एक बानगी है. लिखने बैठेंगे तो कई पन्ने भर जायेंगे.

तिनका सामाजिक संस्था की शुरुआतः मना का मानना था कि आत्मरक्षा केवल शरीर को नहीं, बल्कि मन को भी मजबूत बनाती है। इसी सोच के साथ उन्होंने 2017 में अपने कोच रीतेश तिवारी के साथ मिलकर तिनका सामाजिक संस्था की स्थापना की. तिनका का उद्देश्य है – ग्रामीण और पिछड़े इलाकों की महिलाओं और बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देना, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना, और शिक्षा व नेतृत्व के माध्यम से आत्मनिर्भरता की भावना जगाना। तिनका के माध्यम से हरदा , भोपाल और होशंगाबाद के अलावा प्रदेश के अनेक जिलों में कराटे के प्रशिक्षण के माध्यम से 76000 से अधिक लड़कियाँ और युवा निःशुल्क प्रशिक्षण लेकर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं. सबसे महत्वपूर्ण बात है कि जो युवा कराटे सीखते हैं उनमे से अधिकांश संस्था की सक्रिय सहायता से प्रशिक्षक का रोजगार भी हासिल कर पाते हैं.

अंकुरण के साथ जुडावः 2021 में तिनका सामाजिक संस्था और मना मंडलेकर का जुड़ाव नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया की अंकुरण परियोजना के साथ हुआ. अंकुरण से जुड़ना उनके व्यक्तित्व और संस्था की क्षमताओं के लिए एक अद्भुत अनुभव साबित हुआ. वे बताती हैं कि एनएफआई द्वारा प्रदान किये गए प्रशिक्षणों और साथियों द्वारा निरंतर सहयोग के कारण उनकी संस्था में संस्थागत एवं वित्तीय प्रक्रियाओं में मजबूती आई. एक सशक्त टीम तैयार हुई और आज देशभर में मना के साथ तिनका को भी लोग सम्मान के साथ जानते हैं. मना ने तिनका में एक ऐसी टीम बनाई है जो गाँव-गाँव जाकर महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षित और सम्मानजनक माहौल बना रही है। उन्होंने शालिनी, खुशी, जिज्ञासा, पायल, संध्या जैसी कई नई लीडर्स तैयार की हैं, जो आज अपने-अपने गाँवों में केंद्र चला रही हैं. उनकी नेतृत्व शैली सहयोगी, पारदर्शी और दूरदर्शी है.

वे मानती हैं कि सशक्त समाज तब बनता है जब हर व्यक्ति को बराबरी से अवसर मिले. मना को उनके उत्कृष्ट कार्य और योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमे' प्रमुख हैंः सीआईआईएफ वुमन एग्ज़ेम्पलर अवार्ड फाइनलिस्टः नई दिल्ली (2019), सैंडविक इंडिया जेंडर अवार्ड विजेता : पुणे (2019), वी द वूमन अवार्ड : भोपाल (2019), वूमन ऑफ फ्यूचर अवार्डः जयपुर (2019), मार्था फेरेल अवार्ड फाइनलिस्टः नई दिल्ली (2022), नारी शक्ति सम्मान : हरदा (2023), 10वां विमेन अस्तित्व सम्मान : नई दिल्ली (2025), साम्या एक्सीलेंस अवार्ड फॉर जेंडर चैम्पियंस : 2025, तेजस्विनी अवार्ड : हरदा (2025). मना मंडलेकर न केवल खिलाड़ी हैं, बल्कि एक प्रेरक वक्ता भी हैं जिन्होंने देश के कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी कहानी साझा की है.

डॉ ठाकुर सेवालय ट्रस्ट द्वारा मंदिरों पर आधारित भव्य रंगोली प्रदर्शनी का आयोजन

धार । दीपावली के शुभ अवसर पर धार के रासमंडल में डॉ मनोहर सिंह ठाकुर सेवालय ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष की परंपरानुसार इस वर्ष भी भव्य धार्मिक मंदिरों पर आधारित रांगोली प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।सर्वप्रथम आयोजन के प्रारंभ में संरक्षक डॉ शरद विजयवर्गीय , ट्रस्ट अध्यक्ष अजय सिंह ठाकुर ,डॉ अभिषेक वैद्य,टोनी छाबड़ा द्वारा डॉ ठाकुर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए देश के प्रसिद्ध धार्मिक मंदिरों की थीम पर जिसमें मुख्य रूप से महाकाल की भस्म आरती,केदारनाथ मंदिर,जगन्नाथ मंदिर ,अमृतसर का गोल्डन टेंपल,कैलाश पर्वत, सहित अनेक मंदिरों को रंगों में उतार ट्रस्ट सदस्यों के प्रयासों से रंगोली बनाई गई । जिसे धार नगर की धार्मिक जनता ने निहारते हुए सराहा जो शाम 7 बजे से रात्रि करीब 2 बजे तक निरंतर चलता रहा। इस आयोजन में मुख्य रूप से आशुतोष विजयवर्गीय,अनमोल जायसवाल,अभिषेक विजयवर्गीय,गौतम चौहान,केशव शर्मा,पीयूष सोनी, अवि पाण्डेय,प्रखर सिंह ठाकुर,अमन डोड,वंश वसुनिया,आयुष डोड,सुमित सुनेर आदि ट्रस्ट सदस्यों द्वारा विशेष प्रयासों से सम्पन्न हुआ।

पीथमपुर पुलिस को आयशर वाहन में अवैध शराब परिवहन करते 1 आरोपित को गिरफ्तार करने में मिली सफलता

आयसर वाहन में प्याज के कट्टों के नीचे छिपाकर अवैध शराब का किया जा रहा था परिवहन

धार। पीथमपुर पुलिस को आयशर वाहन में अवैध शराब परिवहन करते 1आरोपित को गिरफ्तार करने में सफलता मिली है। आयसर वाहन में प्याज के कट्टों के नीचे छिपाकर अवैध शराब का किया जा रहा था परिवहन ।आयशर में रखी कुल 291 पेटीयाँ बीयर एवं अग्रेंजी शराब कीमती 16,01,520/- रुपये व आयशर वाहन कीमती 7,50,000/- रुपये कुल मश्रुका कीमती 23,51,520/- रुपये को जप्त किया। पुलिस अधीक्षक धार मयंक अवस्थी द्वारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक धार विजय डावर, एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक धार पारुल बेलापुरकर के मार्गदर्शन में धार जिले में अवैध शराब की खरीदी/बिक्री, परिवहन में संलिप्त गिरोह की धरपकड़ करने हेतु जिले के समस्त अनुविभागीय अधिकारी पुलिस व समस्त थाना प्रभारियों को आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया था। इसी तारतम्य में नगर पुलिस अधीक्षक पीथमपुर रवि सोनेर के मार्गदर्शन में 23 अक्टूबर की दरमियानी रात में थाना पीथमपुर पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि एक आयशर वाहन क्रमांक रूा-18ु्ष्ट-1234 अशोक ली लेण्ड कंपनी में प्याज के कट्टों के नीचे अवैध शराब भरकर महू नीमच रोड टोल टैक्स से निकलने वाला है। जिस पर थाना प्रभारी पीथमपुर निरीक्षक राजेन्द्र सोनी के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए महू नीमच रोड टोल टेक्स के पास नाकाबंदी कर आयशर वाहन क्रमांक रूा-18ु्ष्ट-1234 को रुकवाया तथा ड्रायवर से नाम पता पूछते उसने अपना नाम- नूर मोहम्मद पिता गुल मोहम्मद उम्र 40 वर्ष निवासी ग्राम सुखेडा थाना सादलपुर जिला धार का होना बताया। पुलिस टीम द्वारा आयसर वाहन को चेक करते उसमें प्याज

के कट्टों के नीचे रखी कुल 291 पेटी बीयर व अंग्रेजी शराब की मिली। जिसका वैधानिक लायसेंस मांगते नहीं होना बताया। जिस पर से थाना पीथमपुर पुलिस द्वारा आरोपी नूर मोहम्मद को मौके से गिरफ्तार कर आरोपी के विरूद्ध थाना पीथमपुर में अपराध क्रमांक 467/2025 धारा 34(2) आबकारी एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी पीथमपुर निरीक्षक राजेन्द्र सोनी, सउनि पदमसिंह, प्रआर. महेन्द्र, प्रआर. मेहरबानसिंह, प्रआर. नरेन्द्र, आर. लखन, आर. आदर्श, आर. आकाश का योगदान रहा ।

पश्चिम क्षेत्र विद्युत कंपनी ने उपभोक्ताओं के लिए वाट्सएप चेटबोट सुविधा प्रारंभ की

भोपाल (नप्र)। पश्चिम क्षेत्र विद्युदत वितरण कंपनी की सूचना प्रौद्योगिकी टीम द्वारा उपभोक्ता सुविधा के लिये वाट्सएप चैटबोट व्यवस्था प्रारंभ की है। प्रबंध निदेशक श्री अनूप कुमार सिंह के समक्ष इस नई व अत्याधुनिक व्यवस्था का प्रस्तुतिकरण व अनौपचारिक शुभारंभ हुआ। पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के उपभोक्ताओं को अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर से वाट्सएप से 7312426395 पर ॥द्व लिखना होगा। इसके बाद हिंदी अंग्रेजी भाषा के विकल्प का चयन कर प्रीपेड बिल, पोस्टपेड बिल, पास बुक, बिलों के पीडीएफ, सोलर संबंधी जानकारी, दैनिक खपत, संक्षिप्त विवरण, दैनिक बिजली खर्च की जानकारी, मासिक खपत, जमा राशि की जानकारी, बकाया राशि की जानकारी, प्रीपेड कनेक्शन होने पर वालेट में उपलब्ध बैलेंस इत्यादि विवरण एक दो सेकंड में ही प्राप्त हो जाएगा।

मुख्यमंत्री के अथक प्रयासों से प्रदेश में निवेश का नया कीर्तिमान

हर जिले में औद्योगिक निवेश की अपार संभावनाएं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास अब केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य के हर जिले में निवेश को सक्रिय रूप से लाने का काम किया है। उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, नर्मदापुरम, शहडोल, सागर और रीवा में आयोजित क्षेत्रीय रीजनरल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव (ऋष्ठ्ठष्ट) उद्योग सम्मेलन ने स्थानीय उद्यमियों और उद्योगपतियों को सीधे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों के साथ जोड़ा। मुख्यमंत्री ने जर्मनी, स्पेन और जापान सहित प्रमुख देशों के दौरे किए, जहाँ उन्होंने मध्यप्रदेश के औद्योगिक अवसरों और निवेश की संभावनाओं को वैश्विक मंच पर पेश किया। देश के प्रमुख औद्योगिक शहरों में रोड शो के माध्यम से निवेशकों को प्रदेश की सरल सुगम औद्योगिक नीतियों, योजनाओं और अवसरों से सीधे परिचित किया। इन पहलों से न केवल निवेश बढ़ा बल्कि उद्यमियों के लिए औद्योगिक अवसर और युवाओं के लिए रोजगार भी सृजित हुए।

औद्योगिक अधोसंरचना और प्रमुख परियोजनाएँ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में औद्योगिक अधोसंरचना का विस्तार तेजी से हुआ है। राज्य के लगभग 85 प्रतिशत जिलों में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए गए हैं, जो प्रत्येक जिले की विशेषताओं और क्षमताओं के अनुरूप हैं। सितंबर 2025 तक 33 हजार 450 हेक्टेयर में 139 औद्योगिक पार्क तैयार हो चुके हैं जो 2023 की तुलना में दोगुने से अधिक हैं। नए औद्योगिक क्षेत्रों के लिए 4 हजार 861 हेक्टेयर में 5,700 करोड़ रुपए, मौजूदा क्षेत्रों के उन्नयन के लिए 761.77 करोड़ रुपए, और विशेष सहायता योजना के तहत 5 हजार 165.36 करोड़ रुपए मूल्य की 43 परियोजनाएँ स्वीकृत हुई हैं।

उज्जैन में विक्रम उद्योगपुरी एक स्मार्ट औद्योगिक टाउनशिप के रूप में विकसित किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा हाल में शिलान्यास किए गए धार में पीएम मित्रा टेक्सटाइल पार्क टेक्सटाइल मूल्य श्रृंखला का आधार बन रहा है। सितापुर-मुरैना में मेगा लेदर और फुटवियर पार्क 162.70 हेक्टेयर में फैला निर्यातोन्मुख केंद्र बन गया है। नर्मदापुरम के मोहासा-बाबई में नवकरणीय ऊर्जा उपकरण निर्माण क्षेत्र में 17 हजार 750 करोड़ रु. का निवेश हुआ है, 21,777 रोजगार सृजित हुए

और 514.50 एकड़ भूमि 22 इकाइयों को आवंटित की गई। पेस सेकेण्ड में नौ अतिरिक्त इकाइयों के लिए 551 एकड़ भूमि आवंटित की गई है, जिससे 39,210 करोड़ रुपए का प्रस्तावित निवेश और 14 हजार 700 से अधिक रोजगार सृजित होंगे।

रतलाम में मेगा इंडस्ट्रियल पार्क, सीहोर में आष्टा क्लस्टर, जमोदी में मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क और ग्वालियर में टेलीकॉम मैन्युफैक्चरिंग ज़ोन राज्य में औद्योगिक विविधता और आधुनिक उत्पादन को मजबूत कर रहे हैं। इंदौर आर्थिक कॉरिडोर के माध्यम से भूमि पूलिंग और औद्योगिक विस्तार सुगम हुआ है।

तकनीक, नवाचार और क्षेत्रीय कौशल

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर और जबलपुर में स्थापित आईटी और डिजिटल उद्योग केंद्र राज्य को बहु-क्षेत्रीय औद्योगिक शक्ति केंद्र बना रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि तकनीक और नवाचार को स्थानीय प्रतिभा के साथ जोड़कर ही औद्योगिक विकास की सार्थकता है। क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन और प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से स्थानीय युवाओं और उद्यमियों को उद्योग की मांग के अनुसार कौशल प्रदान किया जा रहा है।

क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के स्पष्ट परिणाम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के प्रयासों से जिलों में औद्योगिक विकास स्पष्ट रूप से दिख रहा है। रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव ने निवेशकों को हर जिले की विशेष क्षमताओं और निवेश अवसरों जिससे निवेश सीधे धरातल पर आया। रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के माध्यम से यह सुनिश्चित हुआ कि विकास सिर्फ शहरों तक सीमित न रहे, बल्कि जिले और स्थानीय स्तर पर हर कोने में निवेश और उद्योगों का विस्तार हो।

निवेश से साकार हुई प्रगति

प्रदेश में निवेश परियोजनाएँ तेजी से धरातल पर उतर रही हैं। विक्रम उद्योगपुरी, पीएम मित्रा टेक्सटाइल पार्क और नर्मदापुरम के नवकरणीय ऊर्जा उपकरण निर्माण क्षेत्र जैसी परियोजनाओं ने औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को मजबूती दी है। निवेश बढ़ने के साथ ही रोजगार, स्थानीय व्यवसाय और नए उद्योग स्थापित हुए हैं। यह साबित करता है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निवेश प्रयास वास्तविक परिणाम में बदल रहे हैं और प्रदेश की औद्योगिक प्रगति को मजबूती दे रहे हैं।मुख्यमंत्री डॉ. यादव का दृष्टिकोण स्पष्ट है कि औद्योगिकीकरण केवल निवेश तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि स्थानीय रोजगार, क्षेत्रीय संतुलन और सामाजिक सशक्तिकरण को सुनिश्चित करना चाहिए। प्रदेश में निवेश आने से जिले और क्षेत्रों में उद्योग स्थापित हो रहे हैं, स्थानीय युवाओं और उद्यमियों के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं और मध्यप्रदेश अब निवेशकों के लिए भरोसेमंद और सक्रिय औद्योगिक केंद्र बन गया है।

सीवर सफाई और कचरा संग्रहण के कार्य में लापरवाही न बरतें : ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

ऊर्जा मंत्री ने ई-स्कूटी से पाताली हनुमान, स्टेट बैंक पर किया सीवर सफाई का निरीक्षण

भोपाल(नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शुक्रवार को उप नगर ग्वालियर के पाताली हनुमान मंदिर से स्टेट बैंक चौराहा (तानसेन नगर गेट) तक ई-स्कूटी से भ्रमण करते हुए विभिन्न गली-मोहल्लों में सीवर सफाई तथा कचरा संग्रहण कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कई स्थानों पर सीवर सफाई व्यवस्था में खामियां देखकर नाराजगी व्यक्त की।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने जनसंपर्क के दौरान संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए, ताकि नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो और क्षेत्र में स्वच्छता एवं व्यवस्था सुचारू बनी रहे। उन्होंने आम नागरिकों को भरोसा दिलाया कि जनसेवा ही मेरा संकल्प है और स्वच्छ, सुरक्षित और सशक्त ग्वालियर के निर्माण की दिशा उनके प्रयास निरंतर जारी रहेंगे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर के साथ जिला प्रशासन, नगर निगम प्रशासन, विद्युत वितरण कंपनी सहित अन्य विभागों के अधिकारी तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे। इससे पहले ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कांच मील, न्यू कॉलोनी स्थित अपने निज निवास पर आमजन की समस्याओं को सुना और यथा संभव निराकरण करते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया।

टीकमगढ़ नगरपालिका के 4 कर्मचारी निलंबित

भोपाल (नप्र)। नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने टीकमगढ़ नगरपालिका परिषद के 4 कर्मचारियों को निलंबित किया है। उन्होंने कहा है कि नगरीय निकायों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। जन-प्रतिनिधियों से प्राप्त शिकायतों की अब गंभीरता से जाँच की जा रही है और दोषी पाये जाने पर संबंधित के विरुद्ध सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। उल्लेखनीय है कि निलंबित कर्मचारियों के संबंध में टीकमगढ़ विधायक श्री यादवेन्द्र सिंह ने शिकायत की थी।

नगरीय प्रशासन संचालनालय द्वारा कार्यपालन यंत्री सागर को विधायक की शिकायत की जाँच के निर्देश दिये गये थे। प्राप्त जाँच प्रतिवेदन में 4 कर्मचारियों को दोषी पाया गया। दोषी कर्मचारियों द्वारा अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में घोर लापरवाही, उदासीनता और अनुशासनहीनता पाई गई। निलंबित कर्मचारियों में टीकमगढ़ नगरपालिका परिषद के

पदभार ग्रहण न करने वाले चिकित्सकों के विरूद्ध करें कार्रवाई : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

टेलीमेडिसिन सुविधा का हो बेहतर उपयोग

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जिला अस्पताल सहित प्रत्येक स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सक एवं पैरामेडिकल स्टॉफ नियमित रूप से उपस्थित रहें। आम जनता को बेहतर तरीके से स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ समय पर मिले। टेलीमेडिसिन सुविधा का भी विकल्प के तौर पर व्यापक और बेहतर उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पन्ना प्रवास के दौरान कलेक्टर कार्यालय के सभागार में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक में उक्ताशय के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि संचालनालय स्तर से नियुक्त बांड चिकित्सकों को अनिवार्य रूप से पदभार ग्रहण करने के संबंध में निर्देशित किया जाए। इसके बावजूद भी अनुपस्थित रहने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करें। उन्होंने विकासखंड चिकित्सा अधिकारियों से स्वास्थ्य संस्थाओं में स्वीकृत और रिक्त पदों के संबंध में जानकारी ली। सार्थक एप के जरिए उपस्थिति दर्ज कराई जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आशा कार्यकर्ता और एएनएम से स्वास्थ्य योजनाओं का घर-घर संपर्क कर बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित कराएं। हितग्राहीमूलक योजनाओं की राशि का भी समय पर भुगतान हो। समस्त बीएमओ भ्रमण कर मैदानी स्वास्थ्य कर्मचारियों के कार्यों की मॉनिटरिंग कर संसाधनों का बेहतर प्रबंधन सुनिश्चित करें। इसके अलावा बीपी, शुगर और फैटी लीवर का शत प्रतिशत परीक्षण हो। मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के लिए भी सार्थक प्रयास किया जाए।

सभी गर्भवती माताओं का हो पंजीयन

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सभी गर्भवती माताओं का शत प्रतिशत पंजीयन एवं सभी आवश्यक जांच भी समय पर सुनिश्चित हो जिससे हाई रिस्क प्रेगनेंसी की समस्या से भी निजात मिलेगी। बैठक में पूर्व मंत्री एवं विधायक पन्ना बृजेन्द्र प्रताप सिंह एवं विधायक पवई प्रहलाद लोधी सहित जिलाध्यक्ष बृजेन्द्र मिश्रा, नपाध्यक्ष मीना पाण्डेय, जिला पंचायत उपाध्यक्ष संतोष यादव और अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जिला चिकित्सालय पन्ना का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का किया अवलोकन

उप मुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने शुक्रवार को जिला चिकित्सालय पन्ना का भम्रण किया और मरीजों को प्रदत्त सुविधाओं का जायजा लिया। इस मौके पर जिला अस्पताल में मरीज और परिजनों को सभी सेवाएं समुचित रूप से उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने मूलभूत सुविधाओं और प्रबंध का अवलोकन भी किया।उप मुख्यमंत्री ने जिला चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों में पहुंचकर व्यवस्थाएं देखीं। मरीज और आगंतुकों से चर्चा कर स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी ली। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल को अस्पताल की व्यवस्थाओं तथा प्रस्तावित कार्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

पथ विक्रेताओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने वितरित किए जायेंगे ऋण : मंत्री श्री विजयवर्गीय

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने वीडियो कॉन्फ्रेंस में कहा कि मध्यप्रदेश में पीएम स्वनिधि योजना में शहरी क्षेत्र के अधिक से अधिक जरूरतमंद पथ विक्रेताओं को ऋृण सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। इस संबंध में प्रदेश के प्रत्येक नगरीय निकाय को आवश्यक निर्देश दिये जा चुके हैं। मंत्री श्री विजयवर्गीय शुक्रवार को वीसी के माध्यम से केन्द्रीय शहरी कार्य मंत्रालय की बैठक में शामिल हुए। बैठक में केन्द्रीय शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल ने पीएम स्वनिधि पुनर्गठन के संबंध में विभिन्न राज्यों के मंत्रियों के साथ बैठक की। बैठक में राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने पीएम स्वनिधि योजना में अधिक से अधिक महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

पीएम स्वनिधि में देश में पहले स्थान पर- बैठक में बताया गया कि पीएम स्वनिधि योजना का पुनर्गठन कर इसकी अवधि 31 मार्च 2030 तक बढ़ा दी गयी है। पथ विक्रेताओं को योजना का लाभ देने के मामले में मध्यप्रदेश पहले स्थान पर है। प्रदेश में नगरीय क्षेत्रों में शहरी पथ विक्रेताओं को अपना व्यवसाय शुरू करने और आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिये योजना में करीब 9 लाख हितग्राहियों को 2 हजार 78 करोड़ रुपये का ऋृण उपलब्ध कराया गया है। हितग्राहियों को ब्याज सब्सिडी के रूप में 80 करोड़ रुपये की राशि दी गयी है।

हितग्राहियों को प्रशिक्षण- आयुक्त नगरीय विकास श्री संकेत भोंडवे ने बताया कि प्रदेश में पथ विक्रेता अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक करने के लिये नगरीय निकायों के माध्यम से क्षमता निर्माण प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गयी है। हितग्राहियों को वित्तीय और डिजिटल साक्षरता, ई-कॉमर्स, पैकेजिंग, खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता का भी प्रशिक्षण दिलाये जाने की व्यवस्था की गयी है।

डिजिटल हुई महाविद्यालयों की लाइब्रेरी, विद्यार्थियों को मिल रही ऑनलाइन किताबें पढ़ने की नि :शुल्क सुविधा

उच्च शिक्षा विभाग ने कराया ई-ग्रंथालय लाइब्रेरी का निर्माण

भोपाल (नप्र)। उच्च शिक्षा विभाग तकनीकी नवाचार और डिजिटल क्रांति की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। प्रदेश के 544 शासकीय महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों की लाइब्रेरियों का डिजिटलीकरण कर उन्हें ई-ग्रंथालय बनाया गया है। अब विद्यार्थी ई-लाइब्रेरी के माध्यम से ऑनलाइन किताबें नि-शुल्क पढ़ सकते हैं। प्रत्येक महाविद्यालय की लाइब्रेरी को राज्य स्तरीय डिजिटल नेटवर्क से जोड़ा गया है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समान रूप से अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो रही है।

विश्वविद्यालय कलस्टर वार तैयार हुआ ई-ग्रंथालय

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा ई-ग्रंथालय को विश्वविद्यालय कलस्टर वार तैयार कराया गया है। इसके लिए सबसे पहले प्रत्येक विश्वविद्यालय का क्लस्टर तैयार किया गया, फिर उसके अंतर्गत आने वाले सभी शासकीय महाविद्यालयों की लाइब्रेरी को एकीकृत कर ई-ग्रंथालय का स्वरूप दिया गया। विद्यार्थी अब अपने विश्वविद्यालय के ई-ग्रंथालय पोर्टल पर जाकर आसानी से विषयवार पुस्तकों की पढ़ाई कर सकते हैं।

रजिस्ट्रेशन के बाद मिलेगी ई-ग्रंथालय की सुविधा

विद्यार्थियों को ई-ग्रंथालय के माध्यम से ऑनलाइन किताबें पढ़ने के लिए सबसे पहले अपने महाविद्यालय में रजिस्ट्रेशन कराना होगा। रजिस्ट्रेशन के बाद महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थी के ईमेल पर ऑटो-जनरेटेड आईडी और पासवर्ड भेजा जाएगा। इसके बाद विद्यार्थी लॉगिन कर ई-बुक्स का लाभ ले सकेंगे।

32 लाख से अधिक पुस्तकें ई-ग्रंथालय में हैं उपलब्ध

प्रदेश के 544 शासकीय शिक्षण संस्थानों (विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों) में ई-ग्रंथालय से विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाई की सुविधा मिल रही है। करीब 10 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने ई-ग्रंथालय पर रजिस्ट्रेशन है। इसमें लगभग 32 लाख से अधिक पुस्तकें ई-ग्रंथालय पर उपलब्ध है।

डिजिटल शिक्षा की दिशा में बड़ा कदम

ई-लाइब्रेरी व्यवस्था से अब प्रदेश के लाखों विद्यार्थियों को कभी भी, कहीं से भी पढ़ाई करने की सुविधा मिल रही है। यह कदम मध्यप्रदेश को डिजिटल शिक्षा और स्मार्ट लर्निंग की दिशा में एक नया आयाम दे रहा है।अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा विभाग श्री अनुपम राजन और आयुक्त उच्च शिक्षा श्री प्रबल ने बताया कि शासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा विभाग द्वारा ई-ग्रंथालय के माध्यम से ऑनलाइन पढ़ाई की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

राज्य स्तरीय कला उत्सव में प्रदेश के लोक नृत्यों की रही धूम

स्कूल के विद्यार्थी स्थानीय संस्कृति एवं लोक कलाओं का कर रहे प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग का 2 दिवसीय राज्य स्तरीय कला उत्सव शुक्रवार 24 अक्टूबर से भोपाल के कलियासोत कोलार रोड़ के मध्यप्रदेश भूमि एवं जल प्रबंधन संस्थान (वाल्मी) में शुरू हुआ। राज्य स्तरीय कला उत्सवपहले दिन गायन, वादन, नृत्य, नाटक, कहानी वाचन, मूर्तिकला, चित्रकला, स्थानीय शिल्प एवं खेल-खिलौना निर्माण की प्रतियोगिताएँ प्रारंभ हुईं। कार्यक्रम का आकर्षण प्रदेश की लोक संस्कृति पर आधारित नृत्य प्रस्तुतियां रहीं।

कार्यक्रम के शुभारंभ सत्र में अपर परियोजना संचालक समग्र शिक्षा अभियान श्रीमती मनीषा सेतिया ने विद्यार्थियों से कहा कि कला उत्सव वास्तव में बच्चों का उत्सव है, जो उन्हें अपनी संस्कृति, परंपरा और मूल्यों से जोड़ता है। यह आयोजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को साकार करता है और भारत की समृद्ध कला परंपरा से विद्यार्थियों को परिचित कराता है। कला उत्सव के माध्यम से बच्चे पुस्तकों से बाहर निकलकर विभिन्न कलाओं में दक्ष बनते हैं। यह आयोजन भारतीय कला के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस दो दिवसीय राज्य स्तरीय कला उत्सव में मध्यप्रदेश के 9 संभागों से लगभग 250 विद्यार्थी सहभागिता कर रहे हैं। कुल 12 प्रतियोगिता श्रेणियों में विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। लोकनृत्य की श्रृंखला में सागर संभाग की बालिकाओं ने 'बधाई नृत्य' की मनमोहक प्रस्तुति दी, जो बुंदेलखंड क्षेत्र में विवाह एवं त्यौहारों के अवसर पर किया जाता है। जबलपुर संभाग की बालिकाओं ने 'बरेदी नृत्य' प्रस्तुत कर मध्य प्रदेश की देशज संस्कृति को सजीव कर दिया। शहडोल संभाग की बालिकाओं ने 'गोंड जनजाति का गायकी लोकनृत्य' प्रस्तुत किया, जो पशुपालकों द्वारा दीपावली पर किया जाता है। भोपाल संभाग की बालिकाओं ने 'भगोरिया लोकनृत्य' प्रस्तुत किया, जो भील जनजाति की विवाह परंपरा से जुड़ा नृत्य है और सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर गया। सामूहिक लोकगीत प्रतियोगिता में सागर संभाग की बालिकाओं ने बुंदेली कजरी प्रस्तुत की, जो श्रावण मास में गाई जाती है और ऋृतु परंपरा का सुंदर प्रतीक है।

वादन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन- भोपाल के अंश पाटीदार ने बांसुरी पर राग मेघ प्रस्तुत किया। सागर के केशव ने शहनाई पर मनमोहक प्रस्तुति दी। जबलपुर के छात्र पराग ने वायलिन वादन किया। तालवाद्य में भोपाल के कुणाल ठाकुर ने तबले पर तीनताल की प्रस्तुति दी तथा उज्जैन के राजपाल राव ने राग मधुमती प्रस्तुत किया।

समापन समारोह- राज्य स्तरीय कला उत्सव का समापन समारोह 25 अक्टूबर शनिवार को दोपहर 3 बजे होगा। जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। आगामी राष्ट्रीय कला उत्सव का आयोजन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 15 नवंबर से महाराष्ट्र के पुणे में किया जाएगा, जिसमें राज्य स्तर के विजेता प्रतिभागी मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

पराली के उचित प्रबंधन हेतु किसानों को करें जागरूक वैकल्पिक उपायों की दें जानकारी: कलेक्टर श्री विश्वकर्मा

टीएल बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने विभागीय योजनाओं तथा गतिविधियों की समीक्षा कर दिए दिशा-निर्देश

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित टीएल बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा विभिन्न विभागों की योजनाओं, अभियानों तथा विभागीय गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक के प्रारंभ में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सोयाबीन भावांतर योजना के तहत किसान पंजीयन की जानकारी लेते हुए कहा कि सोयाबीन रकबे का सौ फीसदी सत्यापन कराएं। साथ ही सभी एसडीएम गोदामों का भी निरीक्षण करें। उन्होंने भावांतर योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु अधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिए।

बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने पराली या नरवाई प्रबंधन पर चर्चा करते हुए अधिकारियों से कहा कि विगत वर्ष जिन क्षेत्रों में पराली जलाने की अधिक घटनाएं हुई हैं, वहां विशेष रूप से किसानों को पराली के उचित प्रबंधन हेतु जागरूक किया जाए। पराली जलाने वाले किसानों पर जुर्माना लगाने की कार्रवाई भी की जाए। इसके अतिरिक्त धान कटाई हेतु आने वाले हार्वेस्टर के साथ स्ट्रो मैनेजमेंट सिस्टम अनिवार्य रूप से हो, यह सुनिश्चित कराएं। उन्होंने सभी एसडीएम को निर्देश दिए कि नरवाई जलाने पर रोक हेतु प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए जाएं। उन्होंने उप संचालक कृषि को जैविक खेती को बढ़ावा देने कलस्टर विकसित किए जाने के निर्देश दिए।

बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने दुग्ध समृद्धि अभियान के क्रियान्वयन की जानकारी लेते हुए स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को पशुपालन से जोड़ने संबंधी दिशा-निर्देश अधिकारियों को दिए। साथ ही स्व-सहायता समूहों को सब्जी और फूलों की खेती से जोड़ने तथा बढ़ावा देने के भी निर्देश दिए। शिक्षा विभाग की समीक्षा के दौरान शासकीय स्कूलों के परिणाम में और सुधार लाने हेतु अभी से कार्य करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए कि मरम्मत योग्य स्कूल भवनों की शीघ्र मरम्मत कराई जाए। उन्होंने मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना के तहत सामूहिक विवाह कार्यक्रमों के आयोजन का विभिन्न माध्यमों से प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने विभागवार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों तथा निराकरण की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीएम हेल्पलाईन शिकायतों का समयावधि में संतुष्टिपूर्ण निराकरण सुनिश्चित कराएं। बैठक में स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, राजस्व विभाग, शिक्षा विभाग, लोक निर्माण विभाग सहित अन्य विभागों की गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय सहित जिला अधिकारी उपस्थित रहे।

बिजली के तार चोरी करने पर अज्ञात आरोपी के खिलाफ दर्ज कराई एफआईआर

हरदा (निप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा हरदा वृत्त के अंतर्गत ग्राम बरकलां और मनियाखेड़ी के बीच बिजली के तार चोरी करने वाले अज्ञात आरोपित के विरूद्ध थाना टिमरनी में एफ.आई.आर दर्ज कराई गई है। सहायक प्रबंधक हरदा (दक्षिण) श्री अरुण कुमार चंदेले ने बताया कि हरदा (दक्षिण) वितरण केन्द्र के ग्राम बरकलां और मनियाखेड़ी के बीच 13-14 अक्टूबर 2025 को अज्ञात व्यक्ति द्वारा 11 केवी लाइन के 0.63 किमी लंबे एल्युमिनियम तार चोरी कर लिए गए थे। बड़कला में पदस्थ आउटसोर्स लाइन हैल्पर श्री गोविंद लोमारे द्वारा तार चोरी की जानकारी देने पर थाना टिमरनी में अज्ञात आरोपी के विरुद्ध चोरी की एफआईआर दर्ज कराई गई है। थाना टिमरनी द्वारा भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) 2023 की धारा 303(2) के अंतर्गत एफ.आई.आर. दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने चोरी की घटना को गंभीरता से लेते हुए तुरंत कानूनी कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। प्रबंध संचालक ने मैदानी कर्मचारियों और अधिकारियों को सजग रहने को कहा है, ताकि चोरी की घटनाएं न हों और बिजली कंपनी को आर्थिक हानि न हो। कंपनी ने मैदानी अधिकारियों कर्मचारियों से कहा है कि विद्युत आपूर्ति की स्थिति पर लगातार नजर रखें और जिले के कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक से संपर्क कर किसी भी अप्रिय स्थिति में उनसे आवश्यक सहयोग प्राप्त करें।

संक्षिप्त समाचार

गढ़ी स्थित गौशाला में जिला पंचायत अध्यक्ष और कलेक्टर द्वारा की गई गोवर्धन तथा गाय की पूजा-अर्चना

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले की गैरतगंज तहसील के गढ़ी स्थित गौशाला में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा, कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा, स्थानीय जनप्रतिनिधियों तथा श्री राकेश शर्मा द्वारा गोवर्धन की पूजा-अर्चना की गई तथा परिक्रमा की गई। इसके उपरांत उन्होंने गाय का पूजन किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्री मीणा ने कहा कि गोवर्धन और गौवंश की पूजा कर हम संसार को प्रकृति, पर्यावरण और पशुधन संवर्धन का संदेश देते हैं। यह सनातन संस्कृति की देन है। हमारी हर परम्परा और उत्सव में प्रकृति के प्रति आदर और समाज के प्रति उत्तदायित्व समाहित है। गोवर्धन पूजा इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इस अवसर पर अधिकारी और आमजन भी उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पटेल ने समनापुर गौशाला में किया गौवर्धन और गाय का पूजन

रायसेन (निप्र)। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल द्वारा बरेली तहसील के समनापुर स्थित गौशाला में गौवर्धन और गाय का पूजन कर नागरिकों के लिए समृद्धि, स्वास्थ्य और कल्याण की कामना की गई। इस अवसर पर स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं के संरक्षण को नया आयाम दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में गाय को माता का स्थान प्राप्त है। गौसंरक्षण हमारी संस्कृति और आस्था से जुड़ा है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रमुखता से काम किया जा रहा है। जो लोग दुग्ध उत्पादन करना चाहते हैं, उन्हें भी शासन की और से अनुदान राशि दी जाएगी। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी उपस्थित रहे।

शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में की गोवर्धन पूजा

बैतूल (निप्र)। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में गोवर्धन पूजा का आयोजन किया गया।शासकीय पोलीटेक्निक महाविद्यालय प्राचार्य डॉ.अरुण सिंह भदौरिया ने बताया कि इस दौरान परंपरागत रूप से बनाए गए गोवर्धन भगवान की विधिवत पूजा अर्चना की गई। तत्पश्चात गौमाता की पूजा कर गोग्रास खिलाया गया। इस अवसर पर गौ आधारित अर्थव्यवस्था पर भी चर्चा की गई।

कलेक्टर ने माँ रेवा गौ-शाला अतरसमा में किया गोवर्धन पूजन

हरदा (निप्र)। बुधवार को माँ रेवा गौ-शाला अतरसमा में गोवर्धन पूजा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन, एसडीएम श्री अशोक डेहरिया, उप संचालक पशु चिकित्सा श्री अजय रामटेके, गौशाला समिति अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण खेरवा सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। इस अवसर पर कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने विधि विधान से गोवर्धन का पूजन किया।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर बैतूल जिले को मिला सम्मान

बैतूल (निप्र)। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण भारत सरकार नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित उल्लास नवभारत साक्षरता परीक्षा में बैतूल जिले ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इस उपलब्धि के लिए राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल में विगत 15 अक्टूबर को आयोजित सम्मान समारोह में कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, डीपीसी श्री भूपेंद्र वरकड़े एवं जिला सह-समन्वयक को संचालक राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि 20 सितंबर 2025 को संपन्न हुई इस परीक्षा में 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के ऐसे वयस्कों को शामिल किया गया था जिन्होंने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। प्रदेश में राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा 50,049 नवसाक्षरों को परीक्षा में शामिल करने का लक्ष्य दिया गया था, जिसके विरुद्ध बैतूल जिले ने 47 हजार 933 नवसाक्षरों को परीक्षा में सम्मिलित कर 96 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया।

कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने बांद्राभान स्थित वृद्धाश्रम में बुजुर्गजनों से की आत्मीय भेंट

दीपावली की शुभकामनाएं देकर सभी को खिलाई मिठाईयां

नर्मदापुरम (निप्र)। दीपावली पर्व के अवसर पर कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना बुधवार को बांद्राभान स्थित आसरा वृद्धा आश्रम पहुंचीं, जहां उन्होंने वृद्धजनों से आत्मीय मुलाकात कर उन्हें दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा मिठाइयां भी खिलाई। साथ ही उन्होने वृद्धजनों को उपहार भी भेंट किए।

कलेक्टर ने आश्रम में उपस्थित सभी वरिष्ठ एवं बुजुर्गजनों से आत्मीय संवाद किया और उनकी दिनचर्या, स्वास्थ्य तथा आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। आश्रम में उपस्थित वरिष्ठजन कलेक्टर को अपने बीच पाकर प्रसन्न हुए और उनसे स्नेहपूर्वक ढेर सारी बातें कीं। इस दौरान कलेक्टर सुश्री मीना ने वृद्धाश्रम में प्रदत्त भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं एवं अन्य सुविधाओं की भी जानकारी भी ली। बुजुर्गाजनो से वार्तालाप के दौरान ही कुछ बुजुर्गों ने बताया कि पिछले कुछ माहों से उनकी पेंशन बंद हो गई है, जिससे विगत कुछ माहों की पेंशन प्राप्त नही हुई है।इस पर कलेक्टर ने तत्काल संज्ञान लेते हुए एसडीएम नर्मदापुरम को निर्देशित किया कि पेंशन रुकने की समस्या की जांच की जाए और समस्त पात्र बुजुर्गजनों की पेंशन शीघ्र पुनः आरंभ करवाई जाए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि नगर पालिका द्वारा सामाजिक सुरक्षा विस्तार अधिकारी की उपस्थिति में विशेष शिविर आयोजित कर सोमवार तक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। कलेक्टर ने आश्रम में उपस्थित सभी बुजुर्गजनों का सम्मान भी किया और उनके साथ समय बिताया। सभी वरिष्ठ नागरिकों ने कलेक्टर सुश्री मीना के सर पर हाथ रखकर उन्हें स्नेह आशीष प्रदान किय।

गोवर्धन और गोवंश की पूजा हमारी आस्था और संस्कृति का प्रतीक है: राजस्व मंत्री

राजस्व मंत्री ने गोवर्धन पूजा कर देश-प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की

सीहोर (निप्र)। गोवर्धन पूजन का पर्व जिले में श्रद्धा, उत्साह और परंपरागत गरिमा के साथ मनाया गया। जिलेभर में आयोजित इस आयोजन में बड़ी संख्या में किसान, जनप्रतिनिधि, गोपालक, शासकीय सेवक तथा गणमान्य नागरिक शामिल हुए। राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा ग्राम लसूड़िया कांगर में आयोजित गोवर्धन पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए और विधि विधान से गोवर्धन की पूजा अर्चना कर देश प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की। राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि गौसंरक्षण हमारी संस्कृति, आस्था और अर्थव्यवस्था से जुड़ा विषय है। उन्होने कहा कि गोवर्धन और गोवंश की पूजा हमारी आस्था और संस्कृति का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य तय किया गया है, और इसके लिए पशुपालन और जन-भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने में पशुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पशुपालन से दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा की गोवर्धन पूजा के इस आयोजन ने न केवल धार्मिक परंपरा को सहेजने का कार्य किया, बल्कि समाज में पर्यावरण एवं पशुधन संरक्षण की दिशा में जन चेतना का भी सशक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि गोवर्धन पूजा फसल कटने और नई फसल की शुरूआत का समय है। इस घड़ी को उत्साह और उल्लास के साथ मनाने से समाज में नई ऊर्जा का संचार होता है।

ग्राम कचनारिया के बच्चों की मृत्यु के संबंध में वस्तुस्थिति

सीहोर (निप्र)। आष्टा तहसील के ग्राम कचनारिया में 20 अक्टूबर को दो बच्चों की मृत्यु के संबंध में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि सूचना मिलने पर विकासखण्ड के मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. अमित माथुर,प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉ. बी.के. डोहर एवं स्वास्थ्य दल द्वारा 20 एवं 21 अक्टूबर 2025 को ग्राम कचनारिया का भ्रमण किया गया । भ्रमण के दौरान मृतक बच्चों के परिवार के अलावा ग्राम में अन्य कोई भी उल्टी,दस्त, बुखार एवं अन्य बीमारी के लक्षणों वाला कोई केस नहीं मिला। 02 अक्टूबर 2025 को वंश उम्र 08 वर्ष, पिताअखिलेश की तबीयत खराब (उल्टी होने पर) होने पर सिविल अस्पताल आष्टा में 11:13 बजे लाया गया। आष्टा से सुबह 11:30 बजे सीहोर जिला चिकित्सालय रेफर किया गया। जिला अस्पताल पहुचने पर बच्चे को मृत घोषित कर दिया गया। एक बच्चे की मृत्यु घर पर ही हो गई थी ।

बच्चों की मृत्यु प्रथम दृष्टया फूड पॉइजनिंग से होना प्रतीत हो रही हैं । सीएमएचओ डॉ. डेहरिया ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात ही मृत्यु के सही कारणों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। वर्तमान में स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा सतत निगरानी रखी जा रही हैं।

भावांतर योजना के तहत जिले में सोयाबीन खरीदी सुव्यवस्थित ढंग से की जाएं : कलेक्टर श्री सूर्यवंशी

अविवादित नामांतरण, बंटवारा, धारणाधिकार के लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण किया जाएं

बैतूल (निप्र)। भावांतर भुगतान योजना के तहत मंडियों में सोयाबीन की खरीदी शासन निर्देशों के अनुरूप सुव्यवस्थित ढंग से की जाएं। एसडीएम सजगता और गंभीरता से अपने क्षेत्र में खरीदी कराएं। यह निर्देश कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बुधवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समयसीमा की बैठक में उपार्जन संबंधी अधिकारियों को दिये। उन्होंने उप संचालक कृषि को निर्देशित किया कि उपार्जन से पूर्व अनुज्ञप्तिधारी व्यापारियों, मंडी सचिव एवं संबंधी अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर उन्हें खरीदी संबंधी आवश्यक दिशा निर्देशों से अवगत कराएं। उन्होंने सभी एसडीएम को सोयाबीन सत्यापन की कार्यवाही भी प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में आरसीएमएस पोर्टल पर लंबित प्रकरणों की भी तहसीलवार समीक्षा की। उन्होंने सख्त निर्देशित किया कि अविवादित नामांतरण, बटवारा और धारणाधिकार के लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण सुनिश्चित कराएं। उन्होंने राजस्व वसूली में भी गति लाने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि जनजातीय कल्याण की योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वन अधिकार संबंधी प्रकरणों का गंभीरता से निराकरण किया जाएं। उन्होंने ई ऑफिस प्रणाली की समीक्षा कर निर्देश दिए कि फाइलों के मूवमेंट की सतत मॉनिटरिंग कर उनका समय पर निराकरण सुनिश्चित कराएं। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में कस्टम हायरिंग सेंटर के क्रियान्वयन की जानकारी लीं।

उन्होंने कहा कि कस्टम हायरिंग केंद्रों का प्रभावी संचालन किया जाएं, ताकि सभी किसान लाभान्वित हो सकें। उन्होंने खाद वितरण की भी समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश उप संचालक कृषि को दिए। उन्होंने फसल क्षति के प्रकरणों में राहत राशि का त्वरित भुगतान के भी निर्देश दिए। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन, अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहें।

किसानों को नरवाई प्रबन्धन के लिये जागरूक करें

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने बुधवार को अतरसमा में किसान श्री आनन्द जाट द्वारा संचालित कस्टम हायरिंग सेंटर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होने किराये पर दिये जाने वाले कृषि उपकरणों हार्वेस्टर, ट्रेक्टर ट्राली, रीपर, बुआई के उपकरणों की जानकारी ली। साथ ही उप संचालक कृषि को किसानों को नरवाई नहीं जलाने एवं नरवाई का उचित प्रबन्धन के प्रति जागरूक करें तथा सुपर सीडर के उपयोग को बढ़ावा देने के लिये किसानों को प्रेरित किया जाए।

सीधी में संजय टाइगर रिजर्व टीम पर हमला

एसडीओ की गाड़ी पर पत्थरबाजी, अवैध रेत खनन रोकने गई थी टीम, चार गिरफ्तार

सीधी (नप्र)। सीधी जिले के जमोड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत भेलकी गांव में गुरुवार देर रात रेत माफिया ने संजय टाइगर रिजर्व की टीम पर हमला कर दिया। अवैध रेत परिवहन की सूचना पर गश्त कर रही वन विभाग की टीम को निशाना बनाते हुए हमलावरों ने एसडीओ प्रमोद सिंह की सरकारी गाड़ी पर जमकर पत्थरबाजी की, जिससे वाहन क्षतिग्रस्त हो गया।

हमले में टीम के कुछ सदस्यों को चोट

यह घटना उस वक्त हुई, जब संजय टाइगर रिजर्व की टीम जंगल क्षेत्र में अवैध रेत खनन और परिवहन की सूचना पर गश्त कर रही थी। अंधेरे का फायदा उठाकर रेत माफिया ने अचानक टीम पर हमला कर दिया। हमले की गंभीरता इतनी अधिक थी कि एसडीओ की सरकारी गाड़ी पत्थरबाजी के कारण अनियंत्रित होकर खाई में जा गिरी, जिससे वाहन को भारी नुकसान पहुंचा है। इस हमले में टीम के कुछ सदस्यों को भी चोटें आई हैं। हालांकि, घायलों की संख्या की स्पष्ट जानकारी अभी नहीं मिली है।

गिरफ्तार आरोपियों के नाम नहीं बताए

संजय टाइगर रिजर्व के डीएफओ, राजेश कन्नाटी ने बताया कि अवैध खनन को छिपाने की कोशिश में यह हमला किया गया है। उन्होंने जमोड़ी थाना में घटना की शिकायत दर्ज कराई है। डीएफओ ने कहा कि वन विभाग की कार्रवाई से बौखलाए माफिया ने यह कृत्य किया है।

वहीं एएसपी सीधी अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि सरकारी काम में बाधा डालने और हमले के संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। हालांकि जांच पूरी होने तक उनके नाम सार्वजनिक नहीं किए जाएंगे।

सीएम डॉ. यादव ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल के स्थापना दिवस की बधाई दी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल (आई.टी.बी.पी.) के स्थापना दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आई.टी.बी.पी. समर्पण और कर्तव्य निष्ठा के अखंड प्रण के साथ देश की सुरक्षा के लिए सदैव सजग है। साहस-शौर्य और पराक्रम से परिपूर्ण इस बल पर हम सबको गर्व है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देश के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले आई.टी.बी.पी. के जवानों को नमन किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने हमीदिया अस्पताल में कार्बाइड गन से प्रभावित युवाओं एवं बच्चों का हाल जाना

दोषियों पर होगी कठोर वैधानिक कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने हमीदिया चिकित्सालय भोपाल पहुँचकर कार्बाइड गन से दुर्घटनाग्रस्त युवाओं और बच्चों का हालचाल जाना। उन्होंने चिकित्सकों से घायलों के स्वास्थ्य की विस्तृत जानकारी ली और उनके उपचार की सतत मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। चिकित्सकों ने जानकारी दी कि दुर्घटना में घायल कुल 37 मरीजों में से 32 स्वस्थ होकर घर लौट चुके हैं, जबकि 5 मरीजों का उपचार अभी जारी है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सभी मरीजों को सर्वोत्तम चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने चिकित्सकों और नर्सिंग स्टाफ को निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए और निरंतर निगरानी रखी जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि अवैध रूप से पटाखा निर्माण या विस्फोटक सामग्री रखने वालों की सघन जांच की जा रही है। दोषियों पर कठोर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल की डीन डॉ. कविता सिंह, अधीक्षक डॉ. सुनीत टंडन सहित वरिष्ठ चिकित्सकगण उपस्थित रहे।

150 लोगों की आंखों की रोशनी गई, अस्पतालों में 300 लोग पहुंचे, डॉक्टर बोले- ट्रांसप्लांट के लिए कॉर्निया मिलना मुश्किल

दिवाली पर पटाखों के विकल्प में चलाई गई देसी कार्बाइड गन से मध्य प्रदेश में अब तक 300 लोगों की आंखें जख्मी हुई हैं। नेत्र रोग विशेषज्ञों के अनुसार, करीब 50 प्रतिशत मरीजों की आंखों की रोशनी फिलहाल जा चुकी है। इनकी आंखों के सामने सिर्फ वार्म व्हाइट लाइट का गोला ही नजर आ रहा है। एमनियोटिक मेम्ब्रेन इम्प्लांट और टिशू ग्राफ्टिंग जैसी प्रक्रिया से आंखों को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। अंतिम उपाय कॉर्निया ट्रांसप्लांट ही होगा, लेकिन इतनी बड़ी संख्या में ट्रांसप्लांट के लिए जरूरी कॉर्निया मिलना मुश्किल है। भोपाल की बात करें तो अलग-अलग अस्पतालों में ऐसे 162 लोग पहुंचे हैं। ग्वालियर, इंदौर, विदिशा समेत कई जगहों पर ऐसी घटनाओं में 7 से 14 साल तक के बच्चे प्रभावित हुए हैं। बड़ी संख्या में लोगों का नुकसान होने के बाद प्रशासन की नींद खुली और कार्बाइड गन बेचने-खरीदने और स्टॉक रखने पर गुरुवार रात रोक लगाई। भोपाल और ग्वालियर में गन बेचते मिले दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इंदौर में भी कलेक्टर ने कार्बाइड गन बेचने- खरीदने या स्टॉक रखने पर रोक लगा दी है इस गन को घरेलू तरीके से बनाया जाता है। यह 100-200 रुपए में बिक रही है।

आईसीएमआर ने दो साल पहले चेतावनी दी थी

हादसों के बीच यह भी पता चला है कि इस कार्बाइड गन को सोशल मीडिया पर बंदर भगाने के देसी जुगाड़ के रूप में वायरल किया गया था। इस जुगाड़ सिस्टम को लेकर 2023 में आईसीएमआर (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) भोपाल ने चेतावनी दी थी। संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपनी रिसर्च में बताया था कि कैल्शियम कार्बाइड और पानी के केमिकल रिएक्शन से बनने वाली गैस 'एसिटिलीन' सिर्फ धमाका नहीं करती, बल्कि आंखों की रोशनी तक छीन लेती है। यह स्टडी इंडियन जर्नल ऑफ ऑप्थेलमोलॉजी में प्रकाशित भी हुई थी। इसके बाद भी समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए।

300 लोगों की आंखों को नुकसान के बाद जागा प्रशासन, गन पर प्रतिबंध; एफआईआर, एक आरोपी गिरफ्तार

एमपी में कार्बाइड गन से करीब 300 लोगों की आंखों को नुकसान होने के बाद जिम्मेदार जागे हैं। भोपाल में कार्बाइड पाइप गन बेचने, खरीदने और स्टॉक पर रोक लगा दी गई है। यदि ऐसा करते हुए कोई पाया जाता है तो उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज होगी।एडीएम प्रकाश नायक ने गुरुवार रात में यह आदेश जारी किए। जांच की जिम्मेदारी एसडीएम को सौंपी गई है, जो पटाखा की रिटेल और थोक दुकानों पर जाएंगे और पड़ताल करेंगे। हालांकि, दिवाली से पहले ये आदेश जारी नहीं हुए। इस कारण खुलेआम गन की बिक्री हुई और कई लोगों की जान जोखिम में आ गई। भोपाल में कार्बाइड गन के मामले में गुरुवार देर रात एक एफआईआर भी दर्ज की गई है। एहसान नगर निवासी मोहम्मद ताहा पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। वहीं ग्वालियर में भी कार्बाइड गन बेचने वाले एक युवक के खिलाफ केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया है।बता दें कि देसी पटाखा गन (कार्बाइड) से प्रदेशभर में अब तक 300 लोगों की आंखों में जलन के मामले सामने आ चुके हैं। अकेले भोपाल में ही करीब 162 से लोगों की आंखें की रोशनी प्रभावित हुई हैं। ग्वालियर, इंदौर, विदिशा समेत कई जगहों पर मामले सामने आए। ज्यादातर घटनाओं में 7 से 14 साल तक के बच्चे प्रभावित हुए।

प्रॉपर्टी विवाद के चलते घर में घुसकर भाई-भाभी की हत्या

छोटे भाई ने ताबड़तोड़ चाकू मारे, फरार

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक शख्स ने अपने भाई-भाभी की बीच सड़क पर हत्या कर दी। इसके बाद भाग निकला। वारदात की वजह प्रॉपर्टी विवाद बताया जा रहा है। घटना घमापुर थाना क्षेत्र के बल्दी कोरी दफाई में शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे की है। पूरी घटना वहां लगे सीसीटीवी में कैद हो गई।

थाना प्रभारी प्रतिक्षा मार्को ने दोनों को एम्बुलेंस से जिला अस्पताल पहुंचवाया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया है। पुलिस ने बताया कि बबलू चौधरी और उसका बड़ा भाई संजय चौधरी पैतृक मकान के दो हिस्से कर रहे थे। इसी मकान के पीछे उनके दादा रामलाल की जमीन भी है। इस जमीन पर संजय ने मकान बनवा लिया था। बबलू का कहना था कि दादा की जमीन पर उसका भी हक है। इसी बात को लेकर करीब एक महीने से दोनों भाइयों के बीच विवाद चल रहा था। कई बार दोनों के बीच झगड़े हुए। पड़ोसियों ने दोनों को समझाइश दी, लेकिन विवाद सुलझा नहीं।

चाकू लेकर घर के बाहर पहुंचा, भाई को बुलाया-बबलू हाथ में चाकू लेकर संजय के घर पहुंचा। गाली देते हुए संजय को बाहर बुलाया। संजय जैसे ही बाहर आया, बबलू ने हमला कर दिया। संजय के गंभीर घायल होने के बाद बबलू घर में घुसा और भाभी बबीता पर भी एक के बाद एक कई वार किए। फिर वहां से चाकू लहराते हुए फरार हो गया।

यूपी से 50,000 रुपए महीने में कट्टा बनाने आए कारीगर

भिंड में 12 देसी कट्टे, मोटरसाइकिल सहित 5 पकड़ाए; ड्रिल, ब्लोअर मशीनें जब्त

भिंड (नप्र)। भिंड में दिवाली पर कट्टा बनाने वाली फैक्ट्री से 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया। 12 देसी कट्टे, तीन जिंदा कारतूस और हथियार बनाने का सामान जब्त किया। मुख्य आरोपी अभी फरार है। बताया गया कि यूपी से दो कारीगरों को 50 हजार रुपए हर महीने का कहकर कट्टा बनाने के लिए बुलाया गया था। एसपी डॉ. असित यादव और एएसपी संजीव पाठक ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी।

मामला थाना मौ और मेहगांव क्षेत्र के बीच ग्राम रूपावई के पुरा का है। यहां अवैध रूप से कट्टा निर्माण फैक्ट्री चल रही थी। 21 तारीख को बरोही थाना प्रभारी उपनिरीक्षक अतुल भदौरिया सूचना मिली कि अमलेंडी तिराहे पर एक व्यक्ति मोटरसाइकिल से अवैध हथियार लेकर बिक्री के लिए जा रहा है। इसके बाद घेराबंदी कर उन्हें पकड़ा। तलाशी में उसके पास से 1 देसी कट्टा (32 बोर), 3 कट्टे (315 बोर) और 3 जिंदा कारतूस मिले।

पकड़े आरोपी ने बताया- मकान में चल रही फैक्ट्री- आरोपी ने बताया कि वह चार साथियों के साथ ग्राम रूपावई के पुरा में खेत और मकान में बनी तिवरिया पर अवैध हथियार फैक्ट्री चला रहा था। उन्होंने जगह के मालिक को 20,000 रुपए महीने का किराया दिया था, जबकि उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले से दो कारीगरों को 50,000 प्रति माह पर कट्टे बनाने के लिए बुलाया गया था।

फैक्ट्री में अब तक 22 देसी कट्टे बनाए जा चुके थे, जिनमें कुछ 32 बोर और कुछ 315 बोर के थे। पुलिस ने फैक्ट्री से कुल 12 कट्टे, 3 कारतूस, एक होण्डा साइन मोटरसाइकिल और कट्टा बनाने में प्रयुक्त उपकरण जब्त किए हैं। जब्त सामान में ड्रिल मशीन, ब्लोबर मशीन, ग्राइंडर पत्ते, छड़ें, हथौड़े, फनर पत्तियां और लोहे की जाली शामिल हैं। एसपी यादव ने बताया कि पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ में सामने आया कि वे कट्टे 9 हजार रुपए प्रति नग के हिसाब से बेचते थे। पकड़े गए पांच आरोपियों में से तीन खरीदार हैं। फैक्ट्री का मास्टरमाइंड और दोनों कारीगर फिलहाल फरार हैं, जिनकी गिरफ्तारी पर इनाम घोषित किया गया है। इधर एएसपी संजीव पाठक ने कहा कि जिले में अवैध हथियार निर्माण और तस्करी की गतिविधियों पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। इससे पहले भी पुलिस ने डीडी बीहड़ क्षेत्र में अवैध हथियार फैक्ट्री पकड़ी थी।

इस कार्रवाई में निरीक्षक शिवप्रताप राजावत, उपनिरीक्षक अतुल भदौरिया, वैभव तोमर, विवेक प्रभात, स.उ.नि. सत्यवीर सिंह, सउनि. बाबू सिंह जादौन, प्रआर प्रमोद पाराशर, महेश कुमार, मयंक दुबे, सतेंद्र यादव, आनंद दीक्षित, राहुल यादव, हरपाल, विशाल यादव, विकास चौहान और राहुल शुक्ला की अहम भूमिका रही।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से प्रमुख सचिव म.प्र. विधानसभा श्री अरविन्द शर्मा ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

मप्र में 'ग्रोथ हब' पहल की शुरुआत,इंदौर और भोपाल में आर्थिक क्षेत्रों के लिए बनेगा समग्र मास्टर प्लान

भोपाल (नप्र)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन की अध्यक्षता में मध्यप्रदेश की आर्थिक प्रगति को नई दिशा देने के उद्देश्य से शुक्रवार को मंत्रालय में बैठक हुई। बैठक में 'ग्रोथ हब' पहल का औपचारिक शुभारंभ किया गया। यह महत्वाकांक्षी पहल नीति आयोग और मध्य प्रदेश सरकार के संयुक्त प्रयास से इंदौर एवं भोपाल क्षेत्रों के लिए व्यापक और दीर्घकालिक आर्थिक विकास रणनीति तैयार करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस अवसर पर नीति आयोग के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व प्रिंसिपल इकोनॉमिक एडवाइजर सुश्री एना रॉय ने किया।

मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि सुविचारित आर्थिक योजना से न केवल इन क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था सशक्त होगी बल्कि अनियंत्रित शहरी विकास पर भी नियंत्रण पाया जा सकेगा। सुश्री एना रॉय ने बताया कि इंदौर और भोपाल आर्थिक क्षेत्रों के लिए समग्र आर्थिक मास्टर प्लान अगले वित्त वर्ष के प्रारंभ तक तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है और नीति आयोग इस दिशा में राज्य सरकार को पूर्ण सहयोग देगा।

'ग्रोथ हब' पहल के प्रथम चरण में इंदौर आर्थिक क्षेत्र (इंदौर, उज्जैन, देवास, धार, खरगोन, रतलाम, शाजापुर, खंडवा) और भोपाल आर्थिक क्षेत्र (भोपाल, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम्) पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इन क्षेत्रों के लिए आर्थिक प्रोफाइल, प्राथमिक परियोजना सूची और क्रियान्वयन रोडमैप तैयार किया जाएगा। दूसरे चरण में जबलपुर, सतना-रीवा, सागर और ग्वालियर क्षेत्रों को भी शामिल किया जाएगा। बैठक के दौरान नीति आयोग ने जी-हब पहल का संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण किया। संबंधित जिलों ने अपनी आर्थिक प्रोफाइल, प्रमुख अवसर, बाधाएँ और 90-दिवसीय कार्ययोजना साझा की। बैठक में स्टियरिंग कमेटी व वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा में त्वरित कार्यों पर सहमति बनी जिनमें कॉमन फैसिलिटी सेंटर्स, प्लग-एंड-प्ले अवसंरचना, एंटरप्राइज सपोर्ट सेंटर्स, लॉजिस्टिक्स-वेयरहाउसिंग, कौशल एवं अप्रेंटिसशिप, निवेश-प्रोत्साहन और एकीकृत मास्टर प्लानिंग जैसे बिंदु शामिल हैं।यह पहल 'विकसित मध्यप्रदेश' के दृष्टिकोण से पूर्णतः संरेखित है जो नागरिकों को सुखद जीवन, संपन्न रोजगार अवसर और सांस्कृतिक गौरव प्रदान करने की दिशा में कार्यरत है। जी-हब कार्यक्रम के माध्यम से परियोजना-आधारित क्रियान्वयन, नीति सरलीकरण, भूमि आपूर्ति, एकीकृत अवसंरचना और निवेश प्रोत्साहन के जरिये राज्य में उच्च वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण आजीविका और बेहतर 'ईज़ ऑफ लिविंग' सुनिश्चित की जाएगी।

भोपाल से आईएसआईएस आतंकी गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल गिरफ्तार कर ले गई, आईईडी ब्लास्ट की प्लानिंग थी

भोपाल (नप्र)। दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल ने आईएसआईएस (इस्लामिक स्टेट्स ऑफ इराक एंड सीरिया) से जुड़े एक आतंकी को भोपाल के करोंद से गिरफ्तार किया है। वहीं, दिल्ली के सादिक नगर से भी एक आतंकी पकड़ाया है। दोनों मिलकर दिल्ली के भीड़भाड़ वाले इलाकों में आईईडी ब्लास्ट करने की प्लानिंग कर रहे थे।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि दोनों आतंकियों का नाम अदनान है। इन्हें फिदायीन हमले की ट्रेनिंग दी जा रही थी और उनका निशाना दिल्ली था। आतंकियों के पास से संदिग्ध सामान भी बरामद हुआ है। फिलहाल दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की टीम दोनों से पूछताछ कर रही है।पुलिस के अनुसार, यह ग्रुप उन जगहों की तलाश में था, जहां वे जमीन खरीदकर अपनी गतिविधियों का केंद्र बना सकें। वे हथियार बनाने के लिए पैसे भी इकट्ठा कर रहे थे।

पड़ोसी बोले- अदनान अच्छा बच्चा है-भोपाल में पड़ोसी ज्योति अमकरे ने बताया कि सैयद अदनान को अच्छे से जानते हैं। कभी

संदिग्ध नहीं लगा। अच्छा बच्चा है। पढ़ने वाला बच्चा है। इस बार मेरिट में आया था। 88 प्रतिशत आए थे। सीए की तैयारी कर रहा था। उनके घर में साफ-सुथरा माहौल है। पिता फैक्ट्री में हैं और मम्मी गृहिणी हैं। उन्हें यहां रहते 6 साल हो गए हैं। ये किराए का मकान है। आप लोग आए तो हमें शॉक लगा। संदेह करने लायक कभी कुछ नहीं लगा।

सितंबर में 5 आतंकी पकड़ाए थे- सितंबर में भी स्पेशल सेल ने एक बड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया था, जिसमें कई राज्यों से पांच संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया गया था। सभी आरोपियों की उम्र 20 से 26 वर्ष के बीच थी और उन्हें दिल्ली, झारखंड, तेलंगाना और मध्य प्रदेश से पकड़ा गया था।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान झारखंड के बोकारो निवासी अशर दानिश (23), मुंबई के आफताब कुरैशी (25), महाराष्ट्र के मुंब्रा निवासी सूफियान अबुबकर खान (20), तेलंगाना के निजामाबाद निवासी मोहम्मद हुजैफ यमन (20) और मध्य प्रदेश के राजगढ़ निवासी कामरान कुरैशी (26) के रूप में हुई थी।

आतंकियों से मिले इनपुट पर कार्रवाई-पुलिस के अनुसार, इस नेटवर्क का मास्टरमाइंड अशर दानिश था, जो खुद को 'गजवा लीडर' और 'सीईओ' कहता था। इन आतंकियों से मिले इनपुट के आधार पर ही देशभर में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की कार्रवाई लगातार जारी है।

आफताब करता था आतंकी गतिविधियों का लक्ष्य तय-आफताब कुरैशी का काम आतंकी गतिविधियों के लिए लक्ष्य तय करना था, जबकि हुजैफ यमन हथियार बनाने का काम करता था। इन लोगों ने अपने ग्रुप का नाम 'प्रोजेक्ट मुस्तफा' रखा था। जांच में पता चला कि आरोपी सोशल मीडिया के एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर युवाओं को बरगलाते थे। वे खुद को एक एनजीओ की तरह पेश करते थे और धर्म के नाम पर युवाओं को कट्टरपंथी बनाने का काम कर रहे थे।

बच्चों के सुरक्षित और उज्जवल भविष्य के लिए पोलियो की खुराक जरूरी : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व पोलियो दिवस पर 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक दिलवाने का आह्वान किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पोलियो मुक्त भारत का संकल्प जन-जन ने अपनी एकजुटता से सिद्ध किया है। विश्व पोलियो दिवस इस प्रतिबद्धता को निरंतर बनाए रखने के लिए हम सबको प्रेरित करता है। बच्चों के सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें पोलियो की नियमित खुराक दिलाना जरूरी है।

महिला टीचर ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

सुबह भाई ने सबसे पहले देखा बहन का शव पुलिस ने शुरू की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहपुरा इलाके में शुक्रवार सुबह एक महिला टीचर ने घर के हॉल में फांसी लगा जी। सुबह भाई ने सबसे पहले बहन के शव को फंदे पर लटका देखा। जिसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए रवाना किया। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

विधानसभा में पदस्थ हैं पिता- पुलिस के मुताबिक त्रिलंगा कॉलोनी निवासी मोनिका चौपाल पुत्री प्रेम नारायण बहादुर चौपाल (29) एक निजी स्कूल में टीचर थी। जबकि उसके पिता विधानसभा में पदस्थ हैं। उसकी बड़ी बहन की शादी हो चुकी और छोटा भाई प्राइवेट जॉब करता है। शुक्रवार सुबह भाई उठा, हॉल में पहुंचते ही उसने बहन के शव को देखा। शोर मचाकर परिजनों की मदद से बॉडी को फंदे से उतारा। जिसके बाद पुलिस को सूचना दी, घटना की खबर लगते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को पीएम के लिए भेज दिया।

सुसाइड नोट में लिखा मर्जी से दे रही हूं जान

तलाशी लेने पर पुलिस को एक सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उसने लिखा है कि वह अपनी मर्जी से खुदकुशी कर रही है, और उसके परिवार में किसी को परेशान नहीं किया जाए। पुलिस ने सुसाइड नोट जब्त कर आगे की जांच शुरू कर दी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।